चन्दामामा
दिसम्बर १९७५
1 रु

Photo by: **RAVINDRA S. KAMBOJ**

PALM DECORATION

ये लीजिये
आपको लुभानेवाले
क्रॅकीज़
सांता क्लॉस की ही तरह एन. पी. भी बच्चोंके लिए स्वादिष्ट मिठाइयोंका खज़ाना लुटाने लाते हैं। एन. पी. क्रॅकीज़ च्युइंग गम—बबल गम भी—जो पेपरमिंट, पाइनएपल, टूटी फ्रूटी, ऑरॅंज और अनोखे, सुपारीके स्वादयुक्त होते हैं।
इसके अलावा बॉनबाइट—जो मलाईदार और अप्रतिम स्वादिष्ट मिठाई है, और फलोंके रुचिकर स्वादवाले बालगम्स।
आपकी रुचि-पसंद च्युइंग गम
NP
NP — ISI गुणवत्ता के निशानवाले अद्वितीय च्युइंग गम्स और बबल गम्स।
अपनी जेबोंमें हमेशा NP - आपकी पसंद की च्युइंग गम्स रखिए।
दि नॅशनल प्रॉडक्टस
बंगलूर
CRACKIES
bonbite
NP
Dattaram-NP-1 HINDI

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६
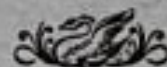
चन्दामामा
संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी
इस महीने की बेताल कथा 'अपूर्व सुंदरी' है। इस कहानी की खास विशेषता यह है कि हम आँखों से जो कुछ देखते हैं, उसे सत्य मान नहीं सकते। कानों से जो सुनते हैं, उसका अर्थ भिन्न हो सकता है। 'अपूर्व सुंदरी' अद्भुत सौंदर्यवती अवश्य है, पर मानवी नहीं। इसी प्रकार 'मिथ्या दोष' नामक कहानी में राजा ने अपनी आँखों से जो देखा, वही मिथ्या-कल्पना का कारण बना। इसी भाँति 'खजाने का भेद' में खजाना नहीं है।
वर्ष : २८ दिसम्बर १९७५ अंक : ६
CHANDAMAMA PUBLICATION
CHITRA

मित्र-भेद

[२९]

लोहे खाने वाले चूहे

एक शहर में नटुक नामक एक व्यापारी था। उसने मेहनत करके जो कुछ कमाया, उसे पुनः खो दिया। तब उसने सोचा कि जिस शहर में उसने वैभव की ज़िंदगी बिताई, उसी शहर में एक दरिद्र बन कर जीना उचित नहीं है। जहाँ पर उसने धन को पानी की तरह बहा कर सुख भोगे, वहाँ पर याचना करते दिन काटने पर लोग उसका मजाक उड़ायेंगे, इसलिए वह इस निश्चय पर पहुँचा कि किसी और शहर में जाकर धन कमाना चाहिए।

उस व्यापारी के घर में दस मन वज़न का पुराना तराज़ू था। उसका व्यापार जब उच्च स्थित में था, तब भारी चीज़ों को तौलने के लिए वह उस तराज़ू का उपयोग करता था। उस तराज़ू को अपने एक मित्र श्यामलाल के यहाँ सुरक्षित रखने की अभ्यर्थना करके घर से चल पड़ा। विदेशों में जाकर उसने काफ़ी धन कमाया, कई साल बाद लौट कर उसने अपने मित्र श्यामलाल से अपना तराज़ू वापस मांगा।

"नटुक! क्या बताऊँ? बड़ी अफ़सोस की बात है। चूहों ने तुम्हारे तराज़ू को खा डाला है!" श्यामलाल ने कहा।

अपने मित्र के मुँह से यह बात सुनते ही उसके क्रोध का पारा चढ़ गया। लेकिन नटुक ने शांत स्वर में कहा—"दोस्त! चूहों ने तराज़ू को खा डाला, तो बेचारे इसमें तुम्हारा क्या दोष है? मैं अभी नदी में नहाने जा रहा हूँ। मेरे कपड़े-लत्ते ले जाने के लिए तुम अपने पुत्र धनदेव को मेरे साथ भेज सकते हो?"

अंतिम पृष्ठ का चित्र

इस पर श्यामलल ने अपने पुत्र से कहा– "बेटा, मामाजी नहाने के लिए नदी पर जा रहे हैं, तुम भी उनके साथ हो जाओ।"

धनदेव नटुक की चीज़ें उठा कर खुशी के साथ नदी पर गया। नटुक ने नहाया-धोया, पर लौटते वक़्त धनदेव को एक पहाड़ी गुफ़ा में छिपा कर गुफ़ा के मुहाने बड़ी शिला रख दी और वह अपने मित्र के घर अकेले लौट आया।

श्यामलाल ने अपने पुत्र को न पाकर पूछा–"दोस्त! मेरा पुत्र धनदेव कहाँ?"

"उफ़! श्यामलाल! क्या बताऊँ? लड़का नदी किनारे पर बैठा था, एक गीध आकर उसको उठा ले गया।" नटुक ने उत्तर दिया।

"तुम झूठ बोलते हो! जवान लड़के को गीध कहीं उठा ले जा सकता है? मैं यक़ीन नहीं कर सकता।" श्यामलाल ने कहा।

"श्यामलाल! तुम चाहे यक़ीन करो, चाहे न करो, मगर बात यही हुई। तर्क करने से फ़ायदा ही क्या?" नटुक ने कहा।

दोनों में इस बात को लेकर झगड़ा हुआ और आखिर वे न्यायालय में गये। श्यामलाल ने उच्च स्वर में कहा– "न्यायाधिपतियो, मेरे प्रति बहुत बड़ा अन्याय हो गया है। मेरे पुत्र को इस नटुक ने ले जाकर कहीं छिपा रखा है। मेरे प्रति न्याय कीजिए।"

"महानुभाव! मैं क्या करूँ? वह युवक नदी के किनारे बैठ था। गीध आकर उस को उठा ले गया।" नटुक ने इतमीनान से उत्तर दिया।

न्यायाधिपतियों ने नटुक से पूछा– "नटुक! पंद्रह साल के युवक को गीध कैसे उठा ले जा सकता है?"

नटुक ने मुस्कुराते हुए पूछा– "महानुभाव! दस मन वज़न वाले मेरे लोहे के तराजू को अगर चूहे खा सकते हैं तो पंद्रह साल के युवक को गीध क्यों नहीं उठा ले जा सकता?"

"तुम यह क्या कहते हो? साफ़-साफ़ बता दो!" न्यायाधिपतियों ने फिर पूछा

नटुक ने सारा वृत्तांत उन्हें कह सुनाया। इस पर नटुक को तराजू तथा श्यामलाल को उसके पुत्र को भी वापस दिलाया।

करटक ने दमनक को यह कहानी सुना कर यों कहा–"पिंगलक ने संजीवक के प्रति जो आदर दिखाया, उसे तुम सहन नहीं कर पाये और यह अन्याय किया। इसीलिए लोग कहते हैं कि इस संसार में ईर्ष्या से बढ़ कर कोई बुरी चीज नही है। मुझे लगता है कि तुम जैसे व्यक्ति के साथ रहना भी खतरे से खाली नहीं है। मुनि तथा बहेलिये के पास जो पक्षी पाले गये हैं, उन पक्षियों की कहानी में पूर्ण सत्य है।"

"वह कैसी कहानी है?" दमनक ने कहा। करटक ने यों सुनाया: एक पहाड़ी प्रदेश में एक तोते के दो बच्चे थे। एक चोर ने उन्हें हड़प लिया। रास्ते में एक बच्चा चोर की टोकरी में से नीचे गिर पड़ा। दूसरे बच्चे को घर ले जाकर चोर ने उसे बोलना भी सिखाया।

रास्ते में जो बच्चा गिर गया था, वह एक मुनि के हाथ लगा। उसे अपने आश्रम में ले जाकर मुनि ने पाला और बोलना भी सिखाया।

एक दिन एक राजा शिकार खेलते उस ओर गया जहाँ पर चोर रहा करता था। राजा को देखते हुए चोर का पालतू तोता चिल्ला उठा–"कोई आया है, पकड़ो, मारा-पीटो!"

राजा डर गया। अपने घोड़े को चाबुक मारा। शीघ्र ही मुनि के आश्रम में पहुँचा। मुनि के पालतू तोते ने राजा को देखते ही चिल्ला कर कहा–"राजन्! आप का स्वागत है। आप विश्राम कीजिए। जल पीकर फलों का सेवन कीजिए।"

राजा उन दोनों तोतों के अंतर को देख आश्चर्य में आ गया। बाद को जान लिया कि वे दोनों तोते एक ही माँ के बच्चे हैं, पर जिस वातावरण में पले हैं, उसी वातावरण का यह अंतर है।
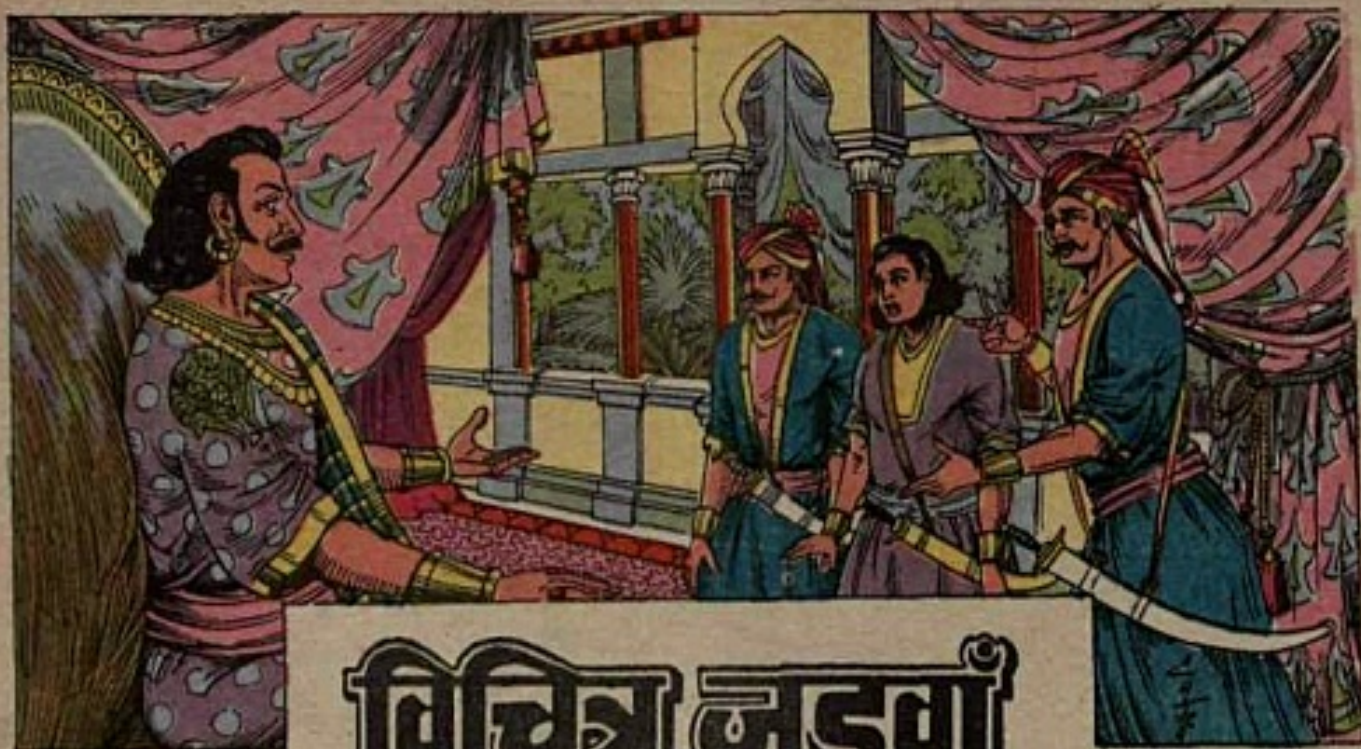
विचित्र जुड़वाँ

[१७]

[भूगर्भगृह में औंधे मुंह लटकनेवाले दाढ़ीवाले को उदयन ने देखा। उसने उदयन को बताया कि संध्याकुमार और निशीथ को राक्षस ने बन्दी बनाया है और उनको सता रहा है। उदयन को खोज लाने का वचन निशीथ ने राक्षस को दिया, इस पर राक्षस ने उसे मुक्त किया। बाद—]

निशीथ ने राक्षस को वचन दिया कि वह उदयन का पता लगाएगा और संभव हुआ तो उदयन को भी अपने साथ लाकर सौंप देगा, अन्यथा उसके पास जो अंजन और भस्म हैं, उन्हें जरूर ला देगा। मगर दुख की बात यह थी कि जब निशीथ रवाना होनेवाला था, तब राक्षस ने उसको भी राजकुमारियों की भांति गूंगा बनाकर छोड़ दिया।

कई दिन की यात्रा के बाद निशीथ मालव देश में पहुँचा। उदयन तथा निशीथ की रूप-रेखाओं में विशेष अंतर न था, इसलिए राजा के सेवकों ने निशीथ को ही उदयन समझा और उसको राजा के सामने हाज़िर किया।

राजा प्रतापसिंह ने भी निशीथ को उदयन ही समझा, पर उसे इस बात का डर हुआ कि उदयन अंजन और भस्म ले

जाने के लिए आया हुआ है। मगर प्रकट रूप में गंभीर हो कर दृढ़ स्वर में पूछा–"साहसी युवक, वापस आ गये! हमें बड़ी प्रसन्नता हुई, पर हमें यह बताओ कि तुम जिस काम पर गये थे, वह सफल हुआ या नहीं?"

निशीथ की समझ में न आया कि वह जब इस देश के लिए बिलकुल ही अपरिचित है, ऐसी हालत में राजा और उनके नौकर उसके प्रति ऐसा आदर क्यों दिखा रहे हैं! साथ ही उसे आश्चर्य भी हुआ, लेकिन इसका कारण जानना चाहे तो वह बोल भी नहीं पाता, राक्षस ने उसे गूंगा बनाकर जो छोड़ रखा है! थोड़ी देर तक निशीथ सोचता रहा, तब उसने इशारों के द्वारा बताया कि वह गूंगा है।

राजा को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा–"उदयन, यह तुम क्या कहते हो? पिछली बार तुम यहां से जब गये, तब अच्छी तरह बोल सकते थे। अब तुम अपने को गूंगा कैसे बताते हो? कोई स्वांग तो नहीं रच रहे हो? हमें तो सहसा विश्वास नहीं होता कि तुम गूंगे हो!

राजा ने जब निशीथ को 'उदयन' नाम से पुकारा, तब सारी बातें उसकी समझ में स्पष्ट आ गईं। उसने लिखने के लिए कागज़ और क़लम लाने का संकेत किया। इस पर उसने कागज़ पर स्पष्ट लिख दिया–वह उदयन नहीं है; बल्कि उदयन का छोटा भाई है। अपने बड़े भाई की खोज में ही वह निकल पड़ा है; अगर उसके भाई का पता दे सके तो वह बहुत ही प्रसन्न होगा। साथ ही उनके इस उपकार को वह जिंदगी भर भूल नहीं सकेगा।

राजा ने वास्तविक बात जान ली। वे यह सोचकर डर गये कि कहीं उसका रहस्य प्रकट न हो जाय। वे घबरा गये, सोचने लगे–मैंने उदयन को दगा देकर उसके अंजन और भस्म हड़प लिये हैं और

उसका पिंड छुड़ा लिया है। मगर अब उसका छोटा भाई आ धमका है। उदयन का समाचार इसको दे तो मेरे लिए शायद खतरा पैदा हो सकता है। यह भी संभव है कि उदयन ने अपने अंजन व भस्म लाने के लिए अपने छोटे भाई को इस रूप में भेजा हो!

यों सोचते-सोचते उसके मन में एक और दुर्बुद्धि पैदा हो गई–"उदयन अब तक राक्षस के हाथों में मर गया होगा। अगर मैं इसको भी मार डालूं तो तीसरा व्यक्ति रह जाएगा। वह भी कभी न कभी मेरे हाथ लग सकता है। उसका भी काम तमाम कर दूं तो सदा के लिए राजकुमारियां यहीं पर रह जाएंगी।"

यों सोचकर राजा ने निशीथ से कहा–"हे नौ जवान, सुन लो! तुम्हारा भाई उदयन यहां पर जरूर आया था, लेकिन वह यहां पर केवल एक ही दिन रहा। इसके बाद वह अपने रास्ते चला गया। मैं नहीं जानता कि वह कहां गया है और किस काम से गया है? मगर तुम विश्वास करो कि इस हालत में मैं तुम्हारी जो भी मदद कर सकता हूं, जरूर करूंगा। उदयन को खोजने के लिए तुम्हें मदद चाहे तो मैं अपने एक-दो सेवकों को भी तुम्हारे साथ भेज दूंगा।"

निशीथ ने कृतज्ञतापूर्वक सिर झुकाकर राजा को प्रणाम किया। इसके बाद राजा ने मंत्री को बुला भेजा और गुप्त रूप से आदेश दिया–"मंत्री महोदय, इस युवक के साथ हमारे दो सिपाहियों को भेज दो। नगर के बाहर जाते ही सब की आंख बचाकर इसका वध करने के लिए कह दो। याद रखो कि यह काम बिलकुल गुप्त रूप से हो जाना चाहिए और भूल से भी सही राजकुमारियों के कानों में यह खबर न पड़े! समझे।"

राजा की बातें सुनकर मंत्री चकित रह गया। मगर राजा के आदेश का पालन न करने पर उसका सिर उड़ा दिया

जाएगा, इसलिए लाचार होकर राजा के आदेशानुसार दो सिपाहियों को साथ दे निशीथ को भेज दिया ।

उधर उदयन ने दाढ़ीवाले की सलाह माँगी । राक्षस दो दिन में लौटनेवाला था । इसलिए दाढ़ीवाले ने सोच-समझकर सुझाया—"उदयन, तुम मुझ को पहले की भांति औंधे मुंह उसी स्थान पर लटकवा दो जिस से राक्षस को हम पर संदेह न हो! राक्षस जब इस कमरे में प्रवेश करेगा, तब तुम इस प्रकार किसी कोने में छिपे रहो जिससे तुम पर उसकी दृष्टि न पड़े । फिर मौक़ा देखकर बाहर निकल सकते हो । इसके बाद तुम अन्य पररेदारों के साथ भूगर्भगृह से बाहर चले जाओ, तब अपने भाइयों का पता लगाने का प्रयत्न करो । इस वक़्त तुम इससे अधिक कुछ नहीं कर सकते!"

"राक्षस जब यहाँ आयेगा, तब तुम से वह जरूर पूछेगा कि तीसरा कूंडा कहाँ है! इसका तुम क्या जवाब दोगे?" उदयन ने अपना संदेह प्रकट किया ।

"हम एक उपाय करेंगे । कूंडे के टूटे टुकड़ों को लाकर यहाँ पर उनका ढेर लगायेंगे ।" दाढ़ीवाले ने सुझाया ।

इसके बाद दोनों ने टूटे कूंडे के टुकड़े लाकर एक जगह डाल दिये । राक्षस जिस दिन आनेवाला था, उसके एक दिन पूर्व ही उदयन ने दाढ़ीवाले को पहले की भांति लटकवा दिया और वह एक कोने में जाकर छिप गया ।

दूसरे दिन नियत समय पर राक्षस आ धमका । किवाड़ खोलते ही कूंडे को टूटे देख वह गरज उठा—"अरे, कमीने! कुत्ते, बताओ, यह किसकी करतूत है?" इन शब्दों के साथ वह दाढ़ीवाले के निकट आया ।

दाढ़ीवाला जरा भी विचलित न हुआ, शांत स्वर में बोला—"मैंने ही तोड़ दिया है। लटकते-लटकते जब ऊब गया तो थोड़ी देर झूलना चाहा, इतनी जोर से झूलता रहा कि एक दफ़े जाकर कूंडे से टकराया ।

फिर क्या था, कूंडा नीचे गिरकर टूट गया। उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। मुझ को माफ़ कर दीजिए! मैंने जानबूझ कर इसे नहीं तोड़ा!"

"तुम तो अव्वल दर्जे के बेवकूफ़ ठहरे!" राक्षस खीझ उठा।

जब यह हो-हल्ला मचा हुआ था, तभी उदयन उस कमरे से खिसक गया। दिन के वक़्त पहरा देनेवाला दल तालाब के पास जा रहा था, उदयन भी उस दल के साथ चल पड़ा। उस दिन पहरेदारों की बातचीत से उदयन ने जान लिया कि राक्षस ने उसकी खोज में निशीथ को भेज दिया है और संध्याकुमार तालाब में हंस के रूप में रह गया है।

यह समाचार मिलते ही उदयन चिंता से भर उठा। यदि वह यहीं पर रह जाएगा तो निशीथ उसकी खोज कैसे कर सकेगा। किसी भी हालत में उससे मिलना उचित होगा। लेकिन यह कैसे संभव होगा। उदयन की समझ में कुछ न आया। उसने सोचा कि इसका उपाय भी दाढ़ीवाला ही सुझा सकता है!

उस दिन शाम को ज्यों ही वह भूगर्भगृह में पहुँचा त्यों ही वह दाढ़ीवाले के कमरे की ओर दौड़ पड़ा। मगर आश्चर्य की बात थी कि कमरे के द्वार खुले हुए थे, अन्दर दाढ़ीवाला गायब था। राक्षस भी वहाँ पर दिखाई नहीं दिया, पर रस्सा ज्यों का त्यों लटक रहा था।

इस दृश्य को देखते ही उदयन एकदम हताश हो गया। वह सोचने लगा—"मैं दाढ़ीवाले के भरोसे पर यहाँ आया तो वह भी गायब है। आखिर उसका क्या हुआ होगा। यह सब देखने से ऐसा मालूम होता है कि राक्षस दाढ़ीवाले पर क्रुद्ध हुआ होगा। कहीं उसकी भी हत्या न की हो, कौन जाने! नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। वह कोई मंत्र-तंत्र करके राक्षस को चकमा दे सकता है। हो सकता है कि वह यहीं कहीं दूसरे कमरे में बन्दी बनाया गया हो।"

यों सोचकर वह सारे कमरे ढूंढ़ने लगा। वह कमरे में इधर-उधर भटक ही रहा था कि उसका पैर एक यंत्र पर जा पड़ा, फिर क्या था, सामने की दिवार दो भाग में बंट गई और रास्ता खुल गया। उदयन आगे बढ़ा। उसके सामने एक सोने का द्वार दिखाई दिया। उस पर तीन भयंकर सर्प फुत्कारते हुए दीख पड़े। उदयन ने सोचा कि शायद दाढ़ीवाले उस कमरे के अन्दर हो, क्या पता! पर उन सर्पों से बचकर कैसे आगे बढ़े! सोचने पर अचानक उसके दिमाग में एक उपाय सूझा।

उदयन कूंडे को लुढ़काते ले आया, उसमें घुसकर ढक्कन बंद कर लिया। एक ही झटके में वह सोने के द्वार को पार कर गया। ढक्कन हटाकर देखा, कोई खतरा न देख वह कूंडे से बाहर निकल आया।

उस कमरे को देखने पर उदयन की आँखें चौंधिया गईं। कमरे की दीवारें तथा फ़र्श भी सोने से निर्मित है। पल भर वह विस्मय में आकर वह कमरा देखता ही रह गया। मगर इस बीच उसे अपने कर्तव्य की याद आ गई। वह दाढ़ीवाले की खोज करने लगा। पर वह कहीं दिखाई न दिया। वह दाढ़ीवाले को ढूंढ़ ही रहा था कि संयोग से उसका पैर वहाँ के एक और यंत्र पर पड़ गया। आश्चर्य की बात थी कि इस बार भी सामने की दीवार दो भागों में बंट गई और अपने आप रास्ता खुल गया। उदयन यह सोचते सावधानी से आगे की ओर बढ़ा कि पिछली बार की भांति इस बार भी कोई विचित्र घटना शायद घट जाय!

इस बार भी सामने एक बहुत बड़ा द्वार दिखाई दिया। पर वह चांदी का द्वार था। उस पर छे सर्प लटक रहे थे। उसने पहली बार ही उपाय सोच रखा था, इसलिए इस बार भी वह कूंडे में घुस पड़ा और चांदी का द्वार पार कर गया। किंतु दुर्भाग्य की बात थी कि इस बार कूंड़ा तेजी से लुढ़कता गया और दीवार

से टकरा कर टुकड़े-टुकड़े हो गया। उदयन कूंडे से बाहर निकला। कमरे की दीवार तथा फ़र्श चांदी से निर्मित थी। मगर इस बार वह विस्मय में आकर उस विचित्र दृश्य को देखता नहीं रहा; फिर वह सोचने लगा कि आगे बढ़ने का उपाय क्या है। इस बार उसे कोई यंत्र दिखाई नहीं दिया। कमरे की छत से चांदी की एक जंजीर लटक रही थी। उछलकर उदयन ने जंजीर पकड़कर खींच दी, सामनेवाली चांदी की दीवार धीरे-धीरे ऊपर उठ गई और रास्ता खुल गया। उदयन ने भीतर क़दम रखा। इस बार एक बड़ा द्वार दिखाई दिया। पर वह द्वार रत्नखचित था। उस द्वार पर बारह सर्प लटक रहे थे।

उदयन अब तक कूंडे में घुसकर सोने व चांदी के द्वार पार कर आया था, अब कूंडा टूट चुका था। इसलिए अब क्या किया जाय, यही सवाल उसके सामने उपस्थित था। अलावा इसके न मालूम उसे इस प्रकार के कितने द्वार पार करने हैं? और कितने खतरों का सामना करना पड़ेगा! वापस लौटकर जाना चाहे, तब भी द्वारों पर लटकनेवाले सर्पों से बच निकलना खतरे से खाली न था। यदि साहस करके रत्नखचित द्वार को पार करना चाहे तो एक-दो नहीं, बारह सर्पों से बचकर निकलना होगा। दोनों ओर से खतरा था। वह पशोपेश में पड़ गया!

उदयन उस कमरे में बैठकर तीव्रता के साथ सोचने लगा। बड़ी देर तक सोचने के उपरांत भी उसे कोई उपाय न सूझा। अब उसके सामने एक ही उपाय था–प्राणों का मोह छोड़कर आगे बढ़ने का! इसका मतलब है कि द्वार पर लटकनेवाले सर्पों को उसे मार डालना होगा।

उदयन ने झट से म्यान से तलवार निकाली। लटकनेवाले उन सर्पों पर वार किया। एक साथ छे सर्प कटकर नीचे गिर गये। दूसरी बार फिर वार किया। इस बार पांच सर्पों के सिर कट गये, अब

केवल एक सर्प बच गया था। उसको भी मार डालने पर वह निर्भय भीतर प्रवेश कर सकता है।

उदयन ने निशाना देख सर्प पर वार किया, मगर इस बार सांप ने वार बचाकर उदयन के हाथ पर डस लिया। उदयन के हाथ की तलवार छूट कर नीचे जा गिरी।

उदयन के खून में जहर चढ़ता गया। देरी होने से प्राणों के लिए खतरा पैदा हो सकता है, इसलिए उसने झट से तलवार हाथ में ली और एक ही वार से अपना हाथ काट डाला। दूसरी बार सर्प पर वार किया और उसको भी मार डाला, लेकिन वह भी जहर के असर से बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा।

उदयन कब तक बेहोश पड़ा हुआ था, उसे स्वयं ख्याल न था। होश में आने पर देखा कि हाथ से जो खून निकल गया था, वह सारे कमरे में फैल गया था और उसके कटे हाथ से अब भी खून बह रहा था। कोई उपाय न देख उस पीड़ा को सहते हुए वह आगे बढ़ा।

थोड़ी दूर जाने पर उसे एक बड़ी गुफा दिखाई दी। उसमें राक्षस की आराध्यदेवी की मूर्ति दिखाई दी। देवी की मूर्ति के कंठ में एक सौ एक खोपड़ियाँ लटक रही थीं। उसके मुंह से धधकती हुई अग्निज्वालाएँ फूट रही थीं। आँखों से भयंकर रोशनी निकल रही थी। रोशनी से किरणें फैल रही थीं। देवी का एक हाथ आगे की ओर फैला हुआ था, उसकी हथेली पर एक गीध खड़ा था। देवी की मूर्ति तथा वहाँ का वातावरण अत्यंत भयानक था।

उस हालत में भी उदयन घबराया नहीं, हिम्मत बटोर कर वह मूर्ति की ओर बढ़ा। चार-पांच क़दम ही उसने बढ़ाया होगा, देवी के ललाट से धुआँ निकला और सारी गुफा में फैल गया। उस धुएँ की वजह से उदयन का दम घुटने लगा।

(अगले अंक में समाप्त)

अपूर्व सुंदरी

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन्, तुम यह जो काम कर रहे हो, इस संबंध में तुम्हारे हितैषियों ने कैसी सलाह दी, मैं नहीं जानता, पर यह बात सत्य है कि जो व्यक्ति अपने हितैषियों की बात नहीं मानता, वह उनसे दूर होता है। इसके उदाहरण के रूप में मैं तुम्हें प्रदीप नामक एक राजकुमार की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: सुवर्णगिरि का युवराजा प्रदीप बड़ा ही सौंदर्य-प्रेमी था। कला के प्रति उसके मन में अगाध आस्था थी। उसके यहाँ प्रमोद नामक एक चित्रकार था। प्रमोद सदा वास्तविक

बेताल कथाएं
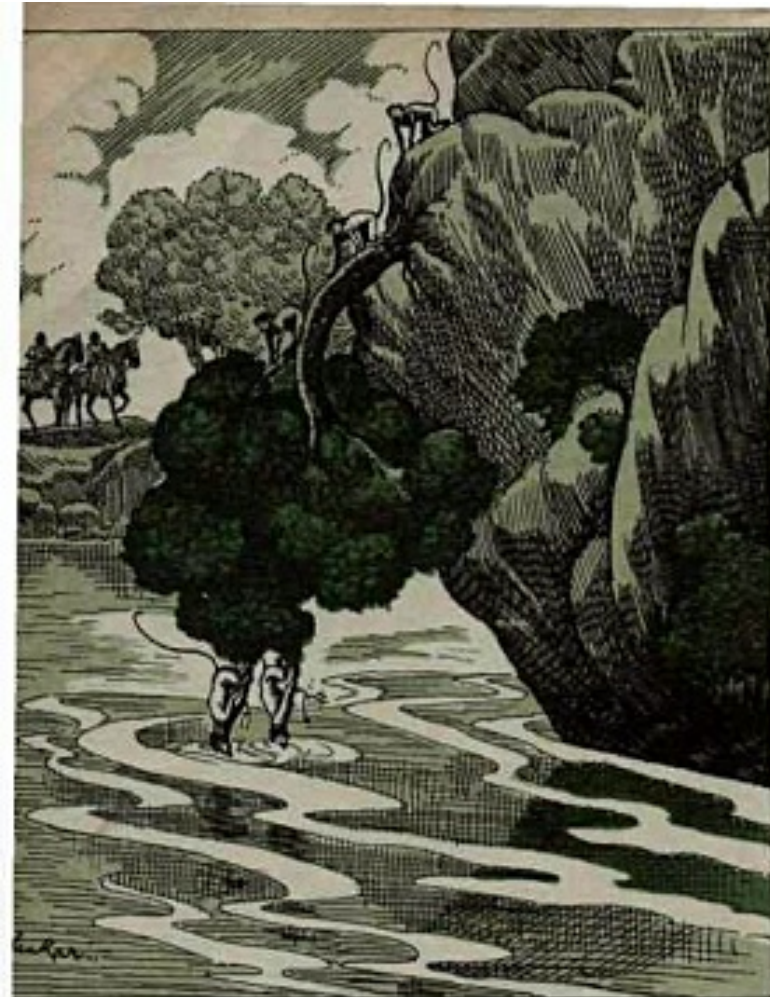
दृश्यों के चित्र ही खींचा करता था। उसके चित्रों में प्राकृतिक सौंदर्य सजीव हो उठता था। प्रमोद के चित्रों से प्रदीप बहुत ही प्रभावित था। उन दोनों के बीच गहरी मैत्री भी थी। दोनों सगे भाइयों जैसे व्यवहार करते थे।

एक दिन प्रदीप ने प्रमोद से पूछा– "कल्पना के सुंदर चित्र क्यों नहीं खींचते?"

"मैं जिस दृश्य को अपनी आँखों से नहीं देखता, उसे कला का रूप नहीं दे सकता। वह मेरे लिए संभव ही नहीं है।" प्रमोद ने जवाब दिया।

प्रमोद अकसर पहाड़ों में चला जाता, वहाँ पर वह जो दृश्य देखता, उन्हें कला का रूप देता और उन चित्रों को युवराजा को दिखाता। एक बार युवराजा ने प्रमोद के चित्र को देख कहा–"यह चित्र मुझे यथार्थ मालूम नहीं होता। इसमें कोई भाव भरा हुआ है। क्या मैं उसे जान सकता हूँ?"

उस चित्र में यह दृश्य अंकित था कि पहाड़ी तलहटी में एक वृक्ष नीचे की ओर बढ़ता जा रहा है। प्रदीप ने बताया कि वृक्षों का इस प्रकार नीचे की ओर बढ़ना असंभव है। इस पर प्रमोद ने युवराजा प्रदीप को उस स्थान पर ले जाकर वह दृश्य दिखाया। कतिपय बंदर उस पेड़ से होकर नीचे उतर गये, पहाड़ी तलहटी में स्थित झरने में पानी पी रहे हैं। वह संभवतः सीधे बढ़ा हुआ पेड़ होगा, मगर किसी कारण से झुककर उलटा होकर भी वह वृक्ष ज़िंदा रहा होगा। इस चित्र को देखने पर प्रदीप को लगा कि प्रमोद यथार्थ दृश्यों का ही चित्रण करता है।

इसके थोड़े समय बाद प्रदीप ने विवाह करना चाहा। कन्या की खोज करना चाहा। कन्या की खोज करना सरल काम न था। इसलिए उसने इस कार्य में प्रमोद की सहायता माँगी। उससे बताया कि वह विभिन्न देशों में जाकर वहाँ की राजकुमारियों के चित्र बनाकर ले आवे।

प्रमोद कई देशों में गया। वहाँ की राजकुमारियों के चित्र बनाकर सुवर्णगिरि को लौट पड़ा। इस यात्रा में उसे एक विचित्र अनुभव हुआ।

एक दिन यात्रा के समय जंगल के रास्ते में अंधेरा फैल गया। परंतु वह चाँदनी की रात थी, इसलिए प्रमोद ने यात्रा चालू रखी। आधी रात के वक़्त वह जिस पगडंडी से होकर गुज़र रहा था, उसकी बगल में से उसे कर्ण मधुर संगीत सुनाई दिया। इसके साथ किसी के द्वारा नृत्य करते समय होनेवाली लयबद्ध घुंघुरों की ध्वनि सुनाई दी।

प्रमोद विस्मय में आ गया। अप्रयत्न ही उसके पैर उस दिशा में बढ़े, उसने एक जगह एक अद्भुत दृश्य को देखा। पूर्णिमा की चाँदनी में फुलवारी के बीच एक अपूर्व सुंदरी नृत्य करते गा रही थी। प्रमोद उसके समीप गया। उसके नृत्य को देखते तन्मय हो गया।

वह युवती बड़ी देर तक नृत्य करती रही। आखिर थकावट का अनुभव करते झूमकर प्रमोद के ऊपर गिर पड़ी, दूसरे ही क्षण दूर हटकर बोली—"क्षमा कीजिएगा। थक जाने के कारण शरीर झूम गया था।"

"कोई बात नहीं, मगर यह बताओ, तुम नृत्य और संगीत में प्रवीण हो! इस निर्जन जंगल में अकेली क्यों रहती हो? इसका भी कोई कारण होगा!" प्रमोद ने उस युवती से पूछा।

युवती खिल-खिलाकर हँस पड़ी और बोली–"एकाकीपन का मुझे डर नहीं है। यह जंगल मेरे लिए नया भी नहीं है! चलिये, मैं अपना घर आप को दिखा देती हूँ।" इन शब्दों के साथ प्रमोद को एक घर में ले गई। पहले ही प्रमोद उस युरती के संबंध में शंका में डूबा हुआ था, अब उस घर को, उसके भीतर की सजावट को और घर के चारों ओर व्याप्त उद्यान को देख वह और शंका से भर उठा। उसके अनति दूर पर सियारों की चिल्लाहट भी सुनाई दी। उसे डर भी लगा।
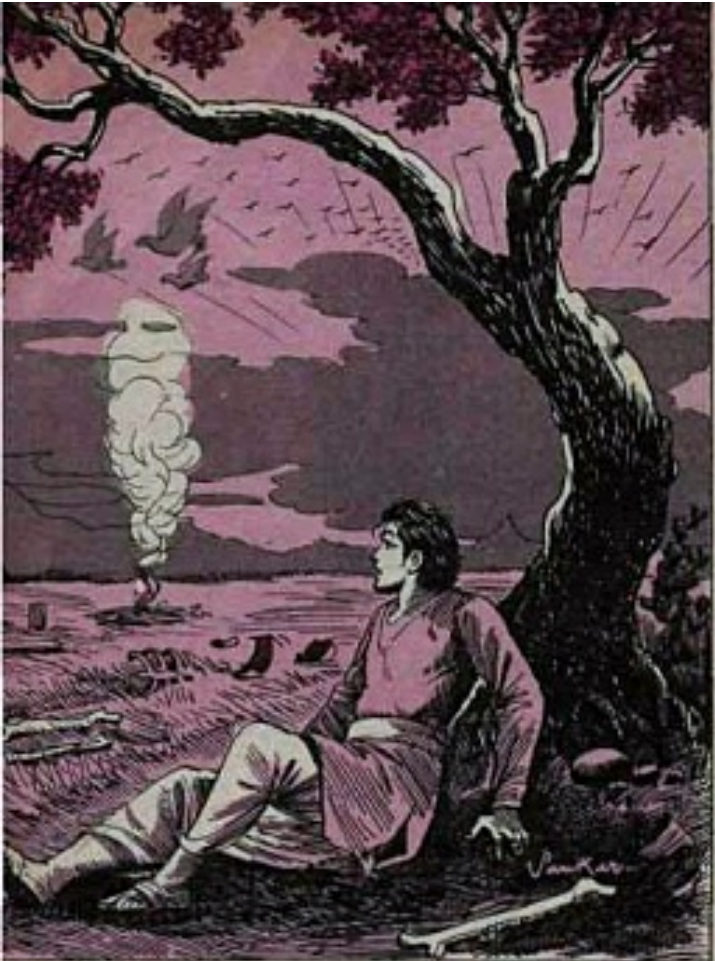
उस मकान में सिवाय उस युवती के और कोई न था। युवती ने प्रमोद के बैठने के लिए एक आसन दिखाया, खाने के लिए फल दिये। इसके बाद उसको एक और कमरे में ले गयी। वहाँ पर फूलों की सेज पर उसे बिठाया, वह पंखा झलते निकट बैठ गई। प्रमोद आँखें मूंद वहीं पर सो गया।

पक्षियों का कलरव सुनकर प्रमोद जाग उठा। उसने आँखें खोलकर देखा। वहाँ पर न वह नृत्य सुंदरी दिखाई दी और न उसका मकान ही था। वह एक वृक्ष के नीचे लेटा हुआ था। उसे चारों तरफ़ हड्डियाँ और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े दिखाई दिये। वह एक श्मशान जैसा लग रहा था।

उस दृष्य को देख प्रमोद का शरीर काँप उठा। उसने रात को जो दृश्य देखा, वह सपना न था। वह एक पिशाचिनी होगी। अच्छा हुआ कि उसने उस युवती को नहीं छेड़ा। लेकिन प्रयत्न करके भी वह उस युवती के सौंदर्य को भूल नहीं पाया। उसका रूप-सौंदर्य प्रमोद की आँखों में बस गया था।

इसके बाद प्रमोद राजधानी पहुँचा। उसने राजकुमारियों के जो चित्र बनाये थे, सब के सब राजकुमार प्रदीप के सामने रख दिये। प्रदीप को उनमें से एक भी चित्र पसंद न आया। उसने

निराश भरे स्वर में कहा–"मैंने कल्पना तक नहीं की थी कि राजकुमारियों में भी सौंदर्य का अभाव होगा। मैं समझता हूँ कि इससे भी अधिक रूपवती कन्याएँ इस संसार में अनेक होंगी।"

थोड़े समय बाद प्रदीप ने प्रमोद पर ज़ोर डाला कि वह अपनी पसंद की किसी सुंदरी का चित्र खींचकर उसके मन को आह्लादित करे।

विवश होकर प्रमोद ने एक कन्या का चित्र प्रारंभ किया। अप्रयत्न ही वह चित्र तैयार हुआ, जिस नृत्य सुंदरी को उसने जंगल में देखा था। क्योंकि दिन-रात उसके दिमाग में उसी सुंदरी का रूप झलकता रहा। उस चित्र को देख राजकुमार प्रदीप स्तब्ध रह गया। उसने कभी सोचा तक न था कि औरतों में ऐसी सुंदरियाँ भी हो सकती हैं। उसने प्रमोद से पूछा–"ऐसी सुंदरी यदि संसार में है तो उसे मुझे दिखाये बिना तुमने आज तक क्यों छिपा रखा?"

"युवराज! यह वास्तविक रूप नहीं है।" प्रमोद ने समझाया।

"तुम झूठ मत बोलो। मैं जानता हूँ कि तुमने जिसको अपनी आँखों से नहीं देखा, उस चित्र को खींच न पाओगे।" प्रदीप ने कहा।

"जो यथार्थ नहीं हैं, वे भी कभी कभी आँखों को दिखाई देते हैं।" प्रमोद ने कहा।

"इसका मतलब है कि तुमने इस स्त्री को कहीं देखा है?" प्रदीप ने पूछा।

प्रमोद ने मान लिया कि उसने उस नारी को देखा है।

"तो मुझे भी दिखाओ। मैं उसके साथ विवाह करूँगा।" प्रदीप ने कहा।

"युवराज! जल्दबाजी मत कीजिए। एक मित्र के नाते आप के हित को दृष्टि में रखकर मैं बता रहा हूँ। इस स्त्री के साथ विवाह करना असंभव है। वास्तव में यह मानवी नहीं है। मुझे इस बात का

नृत्य सुंदरी को देखा था, वहाँ पर दोनों पहुँचे। दोनों घोड़ों से उतर पड़े। आधी रात के होने का इंतजार करने लगे।

आखिर आधी रात हो गई। उन्हें संगीत तथा घुंघुरों की ध्वनि सुनाई दी। दोनों उस दिशा में आगे बढ़े, जहाँ पर वह नृत्य सुंदरी नाट्य कर रही थी। दोनों दूर पर खड़े हो उसको तथा उसके नृत्य को देखने लगे, पर प्रदीप पागल की भांति दौड़कर उस सुंदरी के निकट पहुँचा। वह युवती शिथिल सी होकर प्रदीप पर गिर पड़ी, फिर दूर हटकर उसने क्षमा माँगी।

प्रदीप तन्मय हो बोला—"सुंदरी, मैं

विश्वास भी नहीं है कि मैंने उसको जहाँ पर देखा, वह मुझे फिर से वहीं दिखाई देगी। इसके पीछे समुचित कारण भी था, इसीलिए मैंने इस सुंदरी का समाचार आप को नहीं सुनाया।" प्रमोद ने कहा।

प्रदीप ने हठ करके बताया कि वह स्त्री भले ही ब्रह्मराक्षसी क्यों न हो, फिर भी उसके साथ वह शादी करेगा। इसलिए उसको वह जगह ले जायें जहाँ पर वह दिखाई दी थी। प्रमोद ने विवश होकर मान लिया।

इसके बाद घोड़ों पर सवार हो दोनों जंगल की ओर निकल पड़े। उस दिन भी चांदनी छिटक रही थी। प्रमोद ने जहाँ

तुम्हारे ही वास्ते आया हूँ। तुमको देख मैं धन्य हो गया हूँ। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। तुम्हारे साथ विवाह भी करना चाहता हूँ।" इन शब्दों के साथ प्रदीप ने उस युवती के दोनों हाथ पकड़ लिये। सुंदरी खिल-खिलाकर हंस पड़ी और बोली—"जैसी आप की मर्ज़ी!" इसके बाद उस युवती ने प्रदीप को अपने घर आने का निमंत्रण दिया।

"नहीं, तुम्हारे घर से बढ़कर बड़े-बड़े महल मेरे पास अनेक हैं। अब विलंब ही क्यों? तुम मेरे साथ चलो।" प्रदीप ने कहा। दोनों हाथों में हाथ डाले चलते हुए प्रमोद के निकट पहुँचे।

प्रमोद ने प्रदीप को समझाया– "युवराज! यह औरत मानवी नहीं, पिशाचिनी है। मैं आप के हित की कामना से सचेत कर रहा हूं। इस युवती को राजधानी में मत ले जाइये; यहीं पर छोड़ दीजिए।"

पर प्रमोद की बातों पर प्रदीप ने ध्यान नहीं दिया।

"तुम ना समझी की बातें मत करो। क्या मैं इतनी दूर इस सुंदरी को त्याग देने के लिए ही आया था? इतने समय बाद मेरी पत्नी बनने योग्य युवती हाथ लग गई है, इसको छोड़ देने की सलाह तुम ईर्ष्या के कारण दे रहे हो?" प्रदीप ने आवेश में आकर कहा।

"यदि आप अपने निर्णय को बदलना नहीं चाहते हैं तो मैं आप का साथ न दूंगा। यदि आप उस युवती के साथ विवाह करना चाहते हैं तो मेरी मैत्री त्याग दीजिए।" प्रमोद ने भी उसी स्वर में उत्तर दिया।

"सारी दुनिया मुझे छोड़ दे, मैं चिंता नहीं करूंगा, पर मैं इस सुंदरी को त्याग नहीं सकता।" प्रदीप ने अपना दृढ़ निर्णय सुनाया।

"तब तो आप की मर्ज़ी!" यों कहकर प्रमोद अपने घोड़े पर सवार हो उसी वक़्त कहीं चला गया। प्रमोद के चले जाने पर प्रदीप ने वह रात उस युवती के साथ बिताई। सुबह जाग कर उसने देखा कि उसके आलिंगन में केवल कंकाल मात्र है।

उसे देखते ही प्रदीप का शरीर सिहर उठा। उसने घृणा के भाव से उस कंकाल को दूर फेंक दिया, तब अपने घोड़े पर सवार हो तेजी के साथ राजधानी की ओर चल पड़ा। पीछे से किसी के खिल-खिला कर हँसने की ध्वनि सुनाई दी, लेकिन प्रदीप ने पीछे की ओर मुड़ कर नहीं देखा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, प्रमोद युवराज को छोड़कर क्यों चला गया? क्या इसलिए कि सुंदरी युवराज की पत्नी बनने जा रही है? या इस अहंकार से कि युवराज ने उसकी बात पर ध्यान न दिया? इसका समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "इस बात के लिए कोई सबूत नहीं है कि प्रमोद युवराज से ईर्ष्या करता है! यदि ईर्ष्या होती तो वह प्रदीप को उस सुंदरी को न दिखाता। क्यों कि यह तो उसके हाथ की बात थी। किसी दूसरे जंगल में प्रदीप को ले जाकर प्रमोद यह कह सकता था कि उसे वहीं पर वह सुंदरी दिखाई दी थी। युवराज ने जब उसकी बात नहीं मानी, तब वह उस पर रूठकर नहीं गया था। वह पहले से ही जानता था कि वह युवती पिशाचिनी है। आँखों को दिखाई देनेवाली अवास्तविकता को भी वह समझ पाया। ऐसी शक्ति युवराज नहीं रखता था, इसीलिए युवराज सुंदरी के प्रति संदेह न कर पाया। प्रमोद ने सोचा कि यदि सचमुच युवराज सुंदरी को ले जाकर उसके साथ विवाह करे तो उसकी जिम्मेदारी प्रमोद की होगी। क्यों कि यदि वह सुंदरी का चित्र न खींचता अथवा युवराज को उसे न दिखाता तो युवराज का सुंदरी के साथ विवाह करना संभव न होता। इसमें संदेह नहीं कि इन्हीं कारणों से प्रमोद युवराज को छोड़कर चला गया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
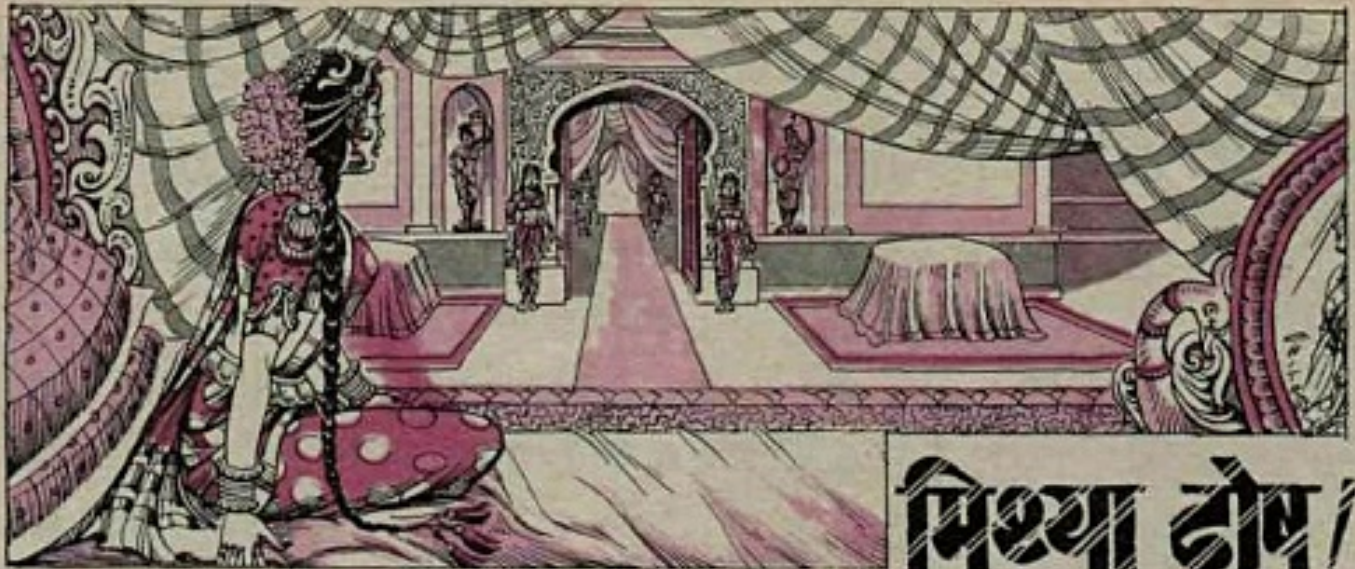
मिथ्या दोष!

महाराज उमेश के तीन पत्नियाँ थीं।

पहली दो पत्नियाँ दो वर्ष के अन्दर ही स्वर्ग सिधारीं। वे अपनी तीसरी पत्नी तारावती को हृदय से चाहते थे। राजा की उम्र चालीस साल की थी। तारावती पच्चीस वर्ष की थी। वह बड़ी बुद्धिमती थी और अनेक विद्याओं में पारंगत थी।

राजा का शिकार के प्रति बड़ा शौक था। जब भी वे शिकार खेलने जाते, अपने साथ तारावती को भी ले जाते थे। एक बार राजा ने एक हफ़्ते के शिकार का कार्यक्रम बनाया और तारावती को यात्रा के लिए तैयार हो जाने की सूचना दी। सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं। लेकिन शिकार खेलने जाते वक़्त राजा तारावती को अपने साथ नहीं ले गये, बल्कि उसको अपने महल से बाहर निकलने पर प्रतिबंध भी लगाया।

पिछले दिन रात को भी राजा तारावती के कक्ष में गये थे। तारावती के साथ राजा के विवाह किये सात साल बीत गये थे। उस दिन से हर रात राजा तारावती के कक्ष में ही बिताया कर थे। इसलिए उस दिन रात को राजा के न आये देख तारावती को आश्चर्य हुआ। वह बड़ी देर तक राजा की प्रतीक्षा करती रही और आख़िर वह सो गई। सुबह उठकर उसने समझ लिया कि वह क़ैद है।

रानी को इस बात का आश्चर्य हुआ कि जो राजा उसे अपने प्राणों से अधिक मानते हैं वे उन्हें कैसे घर में क़ैद कर सकते हैं? यह आदेश भी राजा ने स्वयं नहीं सुनाया। जब वे शिकार खेलने जा रहे थे, तब उन्होंने विदा तक नहीं ली। इसका कारण जानने के ख़्याल से रानी ने पहरेदारों से पूछा। मगर वे किसी सवाल का जवाब

दे न पाये। उसकी अंतरंग सखी कुमारी भी समय पर उसके पास नहीं है। वह पिछली रात को ही मौत की घड़ियाँ गिननेवाले अपने पिता को देखने राजमहल से गुप्त रूप से चली गई है। अपनी असहाय स्थिति पर तारावती रो पड़ी।

यों दो दिन गुज़र गये। तीसरे दिन तारावती की अंतरंग सखी कुमारी आ पहुँची। कुमारी ने हालत जान ली। आधी रात के वक़्त जब पहरेदार नींद की खुमारी में थे, तब कुमारी ने रानी तारावती से पूछा–"महारानीजी! वास्तव में क्या हुआ है? मैं बिलकुल समझ नहीं पा रही हूँ!"

तारावती ने अपना सारा हाल सुनाकर पूछा–"तुम्हारे पिता की तबीयत कैसी है?"

"महारानी जी! वे मुझको अनाथ छोड़कर चल बसे हैं!" कुमारी ने अपने दुख को रोकते हुए उत्तर दिया।

"ओह! मैंने तुम्हें राजमहल से भेजने में कैसा साहस किया? क्या तुमने अपने पिता को प्राणों के साथ रहते देखा भी है या नहीं?" रानी ने पूछा।

"देखा है, महारानी जी! मेरे हाथों में ही उनके प्राण प्रखेरू उड़ गये।" कुमारी ने कहा।

"मेरी इस विपदा में भी मुझे बस इसी बात का संतोष है कि तुमने अंतिम समय में अपने पिता को देखा है।" तारावती ने कहा।

राजा अपनी योजना से पूर्व चौथे दिन ही शिकार से लौट आये। राजा के लौटते तारावती ने झरोखे में से उन्हें देख लिया। उनका चेहरा उदास था।

रानी ने एक कागज़ पर यों लिखकर भेजा–"महाराज! मैं अपने प्राण देने के लिए भी तैयार हूँ! पर यह बताइए कि आखिर मेरा अपराध ही क्या है?"

राजा के यहाँ से शीघ्र ही उत्तर मिला–"तुम कुलटा हो! मैंने अपना संपूर्ण प्रेम तुम्हें समर्पित किया, फिर भी तुमने

पराये पुरुष के साथ प्रणय-संबंध स्थापित किया। इस अपराध का दण्ड तुम्हारे लिए केवल मृत्यु ही है!"

तारावती ने पुनः राजा के पास लिख भेजा–"मैं मृत्यु का स्वागत करने के लिए तैयार बैठी हूँ, पर मरने के पूर्व मुझे केवल आपके चरणों का स्पर्श करने दीजिए। आपने अग्नि को साक्षी बनाकर मेरे साथ विवाह किया है। मैं आशा करती हूँ कि मेरी इस अंतिम कामना की पूर्ति करके एक बार अपने दर्शन देंगे।"

राजा तारावती के कक्ष में आये। तारावती का संकेत पाकर कुमारी बाहर चली गई।

"महाराज! मैं कुलटा हूँ, इसका क्या प्रमाण है?" तारावती ने पूछा।

राजा ने रुद्ध कंठ से कहा–"तुम कुलटा हो! मैं अपनी आँखों पर कैसे विश्वास न करूँ? एक दिन रात को मैं शयन कक्ष में आते हुए उद्यान की खिड़की में से एक दृश्य देख चकित रह गया। उसी दृश्य के द्वारा मैंने जान लिया कि तुम कुलटा हो।"

तारावती ने शांत तथा गंभीर स्वर में उत्तर दिया–"महाराज! जो कुछ आँखों को दिखाई देता है, वह सदा सत्य नहीं होता। मुझे थोड़े क्षण समय दे तो मैं यह बात साबित कर सकती हूँ।"

"अच्छी बात है! साबित करो।" राजा ने कहा। तारावती दूसरे कमरे में चली गई। हाथ में एक प्याला और तश्तरी लेकर लौट आई, फिर बोली– 'महाराज! आपके पास चार सोने के सिक्के हों तो दे दीजिए।"

राजा ने अपनी जेब में से चार सिक्के निकाले, गिनकर तारावती के हाथ दिया। तारावती ने उन सिक्कों को तश्तरी में रख दिया, खाली प्याले राजा को दिखाया। बायें हाथ में स्थित तश्तरी में से सिक्कों को खाली प्याले में उड़ेल दिया। ऐसा करते समय तश्तरी तथा प्याले को राजा की दृष्टि से जरा ऊँचा ही पकड़ लिया।

अब आप ही बताइए कि आप ने किस घटना को देख मेरे चरित्र को कलंकित पाया?" तारावती ने पूछा।

"हो सकता है कि मैंने जो देखा है, वह गलत हो, पर तुम शयन कक्ष में एक पहरेदार के साथ आलिंगन करके उसको पुचकार रही थी। तुम दोनों आमने-सामने खड़े थे। उस दृश्य को देखते ही मेरा क्रोध उमड़ पड़ा। तलवार की मूठ पर मेरा हाथ गया, पर मैंने अपने क्रोध पर जबर्दस्ती नियंत्रण कर लिया। मैंने निश्चय किया कि आइंदा तुम्हारा चेहरा तक नहीं देखना चाहिए, इसलिए मैंने यह आदेश दिया कि तुम को अपने कक्ष से बाहर जाने न दे और तुम्हें उसी कमरे के अन्दर क़ैद कराया।

"महाराज! आपने यह दृश्य स्वयं देखा। आप का विश्वास है कि आप ने जो कुछ देखा, वह सत्य है। क्या अब आप बता सकते हैं कि इसमें कितने सिक्के हैं?" रानी ने पूछा।

"मुझसे क्यों पूछती हो? क्या तुम नहीं जानती कि मैंने तुम्हें जो चार सिक्के दिये, वे ही प्याले में होंगे?" राजा ने उल्टा सवाल किया। तारावती ने आगे बढ़कर प्याले में स्थित सिक्कों को तश्तरी में उड़ेल दिया। तश्तरी में आठ सिक्के थे। राजा अवाक रह गये।

"देखते हैं न, महाराज? आँखों से देखनेवाला दृश्य सदा सत्य नहीं होता!

तारावती विचित्र ढंग से हँस पड़ी और बोली—"महाराज! असली बात यह है! अच्छा हुआ कि आप ने अपने क्रोध पर नियंत्रण कर लिया! वरना एक निर्दोष को मार डालने का पश्चात्ताप जीवनपर्यंत आप को खा डालता। यदि आप एक आध घंटे के बाद आ जायेंगे तो वही विचित्र दृश्य आप उसी खिड़की में से देख सकते हैं। आप मेरे कमरे में दिखाई देनेवाले दृश्य को देख कृपया भाग न जाइए। सीधे शयन कक्ष में आकर

उसका परिणाम भी देखिए।" रानी ने कहा।

"मैं इसका फ़ैसला करके ही छोड़ूंगा। अच्छी बात है, मैं फिर आ जाता हूँ।" राजा ने कहा।

"तो मेरा एक निवेदन है। मैंने राजमहल के एक नियम का उल्लंघन किया है। आप को इसके लिए मुझे क्षमा करना होगा?" तारावती ने पूछा।

"क्या वह अपराध साधारण ही है?" राजा ने पूछा।

"जी हाँ! वह तो राजमहल के सेवकों के नियमों से संबंधित है। कोई बड़ा अपराध नहीं।" तारावती ने कहा।

"ऐसी हालत में मैं तुम्हें क्षमा कर सकता हूँ।" राजा ने बताया।

आध घंटे बाद राजा तारावती के कक्ष में लौटते उद्यान के निकट खिड़की के पास रुके और रानी के शयन कक्ष में देखा। उन्हें वही दृश्य पुनः दिखाई दिया जिसे देख वे नाराज़ हो गये थे। तारावती राजमहल के एक पहरेदार के साथ आलिंगन करके पुचकार रही है।

उस दृश्य को देख राजा क्रोध से पागल हो उठे और शीघ्रतापूर्वक रानी के शयनकक्ष में प्रवेश किया। राजा को देखते ही दोनों व्यक्ति अलग हो गये। पहरेदार

भागने को हुआ तो राजा ने उसे पकड़ लिया। तारावती ने आगे बढ़कर उस पहरेदार की नकली दाढ़ी और मूँछें खींच डाली। तारावती की अंतरंग सखी कुमारी को पहचान कर राजा चकित रह गये।

"यह सब मुझे पशोपेश में डाल रहा है। मुझे शीघ्र इसका रहस्य बतला दो।" राजा ने तारावती से पूछा।

तारावती ने यों बताया: "महाराज! राजमहल के नियमानुसार यहाँ की एक भी दासी रात के वक़्त बाहर नहीं जा सकती। संध्या के समय यह समाचार मिला कि मेरी सखी कुमारी का पिता अपनी अंतिम घड़ियाँ गिन रहा है। यदि

उन्हें प्राणों के साथ देखना हो तो कुमारी को तुरंत रवाना हो जाना चाहिए था। उसी वक़्त कुमारी को भेजने के लिए मैंने एक उपाय सोचा। मैंने अन्य दासियों को बताया कि कुमारी दो-तीन दिन तक मेरे एक ज़रूरी काम पर कमरे से बाहर नहीं जाएगी। मैंने कुमारी को बताया कि वह राजमहल के पहरेदार की पोशाकें प्राप्त करे। नकली दाढ़ी व मूँछें तैयार करके मैंने कुमारी को छिपकाया। कुमारी कहीं से पहरेदार की पोशाकें ले आई। मैंने उसे पहरेदार का वेष बनाया। कुमारी रो रही थी कि वह अपने पिता को प्राणों के साथ देख सकेगी या नहीं, इस पर मैंने उसके साथ आलिंगन करके उसे सांत्वना दी और पुचकारा भी।"

"महारानी! मैंने कैसी भूल की? मुझको क्षमा कर दो।" यों कहते राजा ने तारावती के साथ आलिंगन किया।

इसके दो-तीन दिन बाद कुमारी ने तारावती के बाल संवारते हुए पूछा—"महारानीजी! सोने के चार सिक्के आठ कैसे बन गये?"

"जादू के द्वारा! समझी! वह तश्तरी और प्याला लेती आओ। तश्तरी के नीचे साबून के दाग अब भी हैं। मैंने तश्तरी के नीचे चार सोने के सिक्के साबून से चिपका दिये। राजा ने जो चार सिक्के दिये, वे तश्तरी के ऊपर ही थे। नीचे के सिक्के किसी को दिखाई न दे, इस ख़्याल से मैंने उंगलियाँ ढक दीं। ऊपर के सिक्कों को प्याले में डालते समय नीचे के सिक्कों को भी उंगलियों से प्याले में ढकेल दिया।" तारावती ने सप्रमाण वह दृश्य दिखाते हुए समझाया।

कुमारी ने तालियाँ बजाकर कहा—"महारानीजी! यह तो अद्भुत चमत्कार है!"

"कुमारी, यह बात तुम किसी से मत कहो। क़सम खाओ!" इन शब्दों के साथ तारावती ने कुमारी के द्वारा शपथ कराई।

१६७. पालस्तीन की प्राचीन समाधि

पालस्तीन के मेगिड्डो के पास ५००० वर्ष पूर्व की, कांसे के युग की एक समाधि प्रकट हुई है। उसमें हड्डियों के ढेर तथा बर्तन हैं। पुरातत्व शास्त्रियों ने इसी प्रदेश में सोलमन की घुड़साल के अवशेषों तथा कनान संस्कृति के अवशेषों का भी पता लगाया है। पालस्तीन का प्राचीन नाम कनान है।
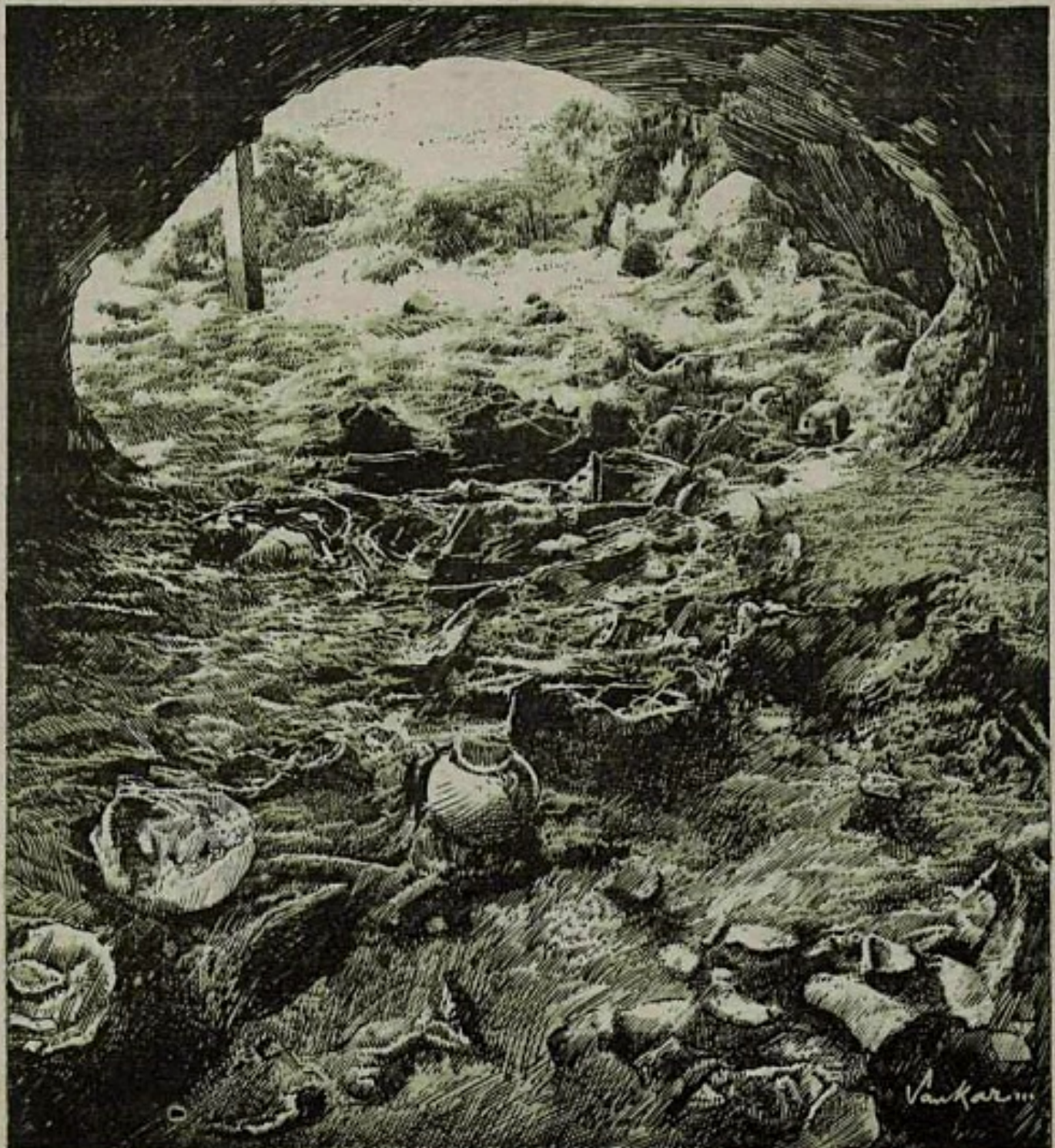
एक पैसे की शादी

एक गाँव में एक बूढ़ी थी। उसने अपने अनाथ पोते का बड़े ही लाड़–प्यार से पाला-पोसा। लड़का रामबुझावन वैसे अक्लमंद न था, पर वह अपनी नानी के लाड़-प्यार से नटखट निकला।

रामबुझावन शादी के योग्य हुआ। उसकी उम्र के सभी लड़कों की शादियाँ हो चुकी थीं। इसलिए वह भी अपनी नानी को तंग करने लगा कि वह उसकी शादी करे।

"एक पैसा हाथ में नहीं, तुम्हें कौन अपनी लड़की देगा?" बूढ़ी ने कहा।

"मैं पैसा लाऊँ तो क्या मेरी शादी करोगी?" रामबुझावन ने नानी से पूछा।

बूढ़ी की समझ में न आया कि इसका क्या जवाब दिया जाय, वह यूँही बोली–"तुम खुद एक पैसा कमा लाओ, फिर बाद की बात सोचेंगे।"

शाम तक वह एक पैसा लाकर बूढ़ी बोला–"लो, एक पैसा लाया हूँ। तुम कल शाम तक मेरी शादी न करोगी तो मैं किसी कुएँ में कूद कर जान दे दूंगा।"

बूढ़ी की समझ में कुछ न आया। लड़का तो आखिर बेवकूफ़ ठहरा। उसने घास-पूस लेकर मानव की आकृति की एक गुड़िया तैयार की। उसे साड़ी पहना कर अंधेरे में एक कोने में बिठा दी। शाम को रामबुझावन ने घर लौटते ही बूढ़ी से पूछा–"क्या तुमने लड़की तै की?"

बूढ़ी ने कोने में रखी घास की गुड़िया दिखाते हुए कहा–"देखो, वही दुलहिन है। उसके कंठ में हल्दी का यह धागा बाँध दो।" यों कहते बूढ़ी ने रामबुझावन के हाथ हल्दी में भीगा धागा दे दिया।

रामबुझावन ने अपने दोस्तों की शादियाँ देखी थीं, उसने गुस्से में आकर कहा–"ऐसी

कविता अग्रवाल

तैसी बेकार की शादी में न करूँगा। बिना पुरोहित और गाजे-बाजे के शादी कैसी?"

"बेटा! मैं क्या कर सकती हूं? तुम जो एक पैसा लाये, लड़की के दहेज़ में चुक गया। पुरोहित और गाजे-बाजे को मैं कहाँ से पैसे ला दूंगी? तुम्हारी मर्ज़ी हो तो इस लड़की के साथ शादी करो, वरना मैं उस लड़की को उसके मायके भेज देती हूं।" बूढ़ी ने साफ़ कह दिया।

रामबुझावन ने सोचा, शादी हो जाय तो भला है! उसने झट से गुडिया के कंठ में हल्दी का तागा बाँध दिया। इस बीच बूढ़ी चुपके से घर से खिसक गई।

रामबुझावन ने अपनी पत्नी से बात करना चाहा। उसने पूछा-"बताओ तो, तुम्हारा क्या नाम है?" पर उसे कोई जवाब न मिला। उसने सोचा कि नई दुलहन लजा रही है। दो-तीन दफे पुकारा, तब भी कोई उत्तर न पाकर वह गुस्से में आ गया। उसने लाठी उठा कर घास की गुडिया पर जमाया और बोला-"तुम्हें अपने मर्द की भी परवाह नहीं है? इसकी सज़ा भोगो।" इसके बाद वह जल्दी-जल्दी डग भरते बाहर चला गया।

आड़ में छिपी बूढ़ी यह सारी हरकत देख रही थी। रामबुझावन के बाहर जाते ही बूढ़ी घर के अन्दर आ गई।

उस घास की गुड़िया को दूर ले जाकर जला दिया। रात-भर रामबुझावन कहीं भटकता रहा, सुबह लौट कर घर में अपनी पत्नी को न पाकर बूढ़ी से ललकार कर पूछा-"मेरी पत्नी कहाँ?"

"तुम्हारी पत्नी यहाँ कहाँ है? तुमने उसे पीटा, वह रूठ कर अपने मायके चली गई।" बूढ़ी ने समझाया।

रामबुझावन अपनी करनी पर पछताते हुए बोला-"अच्छी बात है! उसका घर बता दो, मैं उस को मनवा कर लेते आऊँगा।"

बूढ़ी घबरा गई। उसने सोचा कि कोई जवाब न दे तो वह छोड़ेगा नहीं,

हठ करेगा। इसलिए बोली–"तुम पड़ोसी गाँव में चले जाओ, जिस घर की छत बुनते होंगे, वही उसका मायका है।"

रामबुझावन उसी वक़्त पड़ोसी गाँव के लिए चल पड़ा। दो-तीन गलियाँ छान डालीं। आख़िर एक घर की छत दो आदमी बुनते दिखाई दिये। उसने सोचा कि वही उस का ससुराल है, बस, उस घर में घुस पड़ा। इसे देख छत बुनने वालों ने रामबुझावन से पूछा–"तुम किसके वास्ते आये हो?"

"और किसके वास्ते? मैं अपनी पत्नी के वास्ते आया हूँ। कोई झगड़ा-टंटा न करके चुपचाप मेरी पत्नी को मेरे साथ भेज दो।" रामबुझावन ने उन्हें डांट दिया।

यह बात सुनते ही उन दोनों के चेहरे खिल उठे।

बात यह थी कि वे दोनों सगे भाई थे। उनके एक बहन थी। बचपन में ही उस लड़की की शादी करनी चाही, पर ठीक मुहूर्त के समय दूल्हा कहीं भाग गया। उस दिन से फिर उस का पता न चला। सबने यही सलाह दी कि उस लड़की की शादी किसी दूसरे लड़के के साथ कर दो, पर दोनों भाइयों ने इस ख़्याल से उस की शादी न की कि कभी न कभी उस का पति लौट आ सकता है। अपनी बहन के पति के चेहरे को भी दोनों भाइयों ने ठीक से न देखा था, इसलिए रामबुझावन को देखते ही दोनों ने सोचा कि वही उसका बहनोई है।

दोनों ने बड़े ही आदर के साथ रामबुझावन का स्वागत किया। स्नान कराकर रेशमी कपड़े दिये। मिष्टान्न बनवा कर खिलाया, उपहारों के साथ अपनी बहन को एक गाड़ी में बिठाकर रामबुझावन के साथ भेज दिया।

एक सुंदर कन्या को अपने साथ लिये घर लौटे देख बूढ़ी ने सोचा कि उसके पोते के दिमाग में भगवान ने भले ही गोबर भर दिया हो, पर उसके ललाट में क़िस्मत की रेखाएँ भी खींच दी हैं।

सुकन्या

सिंहपुर का युवराज पुष्पसिंह अपने सफ़ेद घोड़े पर सवार हो परिवार को साथ लेकर जंगल में शिकार खेलने गया। बड़ी देर तक शिकार खेलते रहे। आखिर एक हिरण का पीछा करते बड़ी दूर चला गया। भागते जाकर हिरण एक घर में घुस गया। पुष्पसिंह ने भी हिरण के पीछे उस घर में प्रवेश किया।

वह मकान एक संपन्न व्यक्ति का था। हिरण उसका पालतू जानवर था। उस व्यक्ति को पुष्पसिंह ने अपना परिचय दिया। धनी व्यक्ति इस बात पर प्रसन्न हुआ कि उसका पालतू हिरण प्राणों के साथ घर पहुँच गया है। उसने युवराज को वह रात अपने अतिथि बनकर रहने का निवेदन किया।

रात को भोजन करते समय धनी व्यक्ति ने युवराज से निवेदन किया कि वह धनी की पुत्री सुकन्या के साथ विवाह करे। साथ ही अपनी पुत्री को बुलाकर युवराज को दिखाया। सुकन्या रूपवती कन्या थी।

युवराज ने उस कन्या से पूछा-"खतरे के वक़्त क्या तुम अपने शील की रक्षा कर सकती हो?"

"मैं जरूर अपने शील की रक्षा कर सकती हूँ।" सुकन्या ने उत्तर दिया।

पुष्पसिंह सुकन्या का उत्तर सुनकर प्रसन्न हुआ और उसने उस कन्या के साथ विवाह करने की सम्मति दी।

धनी व्यक्ति ने उसी समय दोनों का विवाह किया। नये दंपति ने थोड़े दिन सुखपूर्वक बिताये, फिर वे दोनों घोड़े पर सवार हो सिंहपुर के लिए रवाना हुए।

संध्या के समय तक पति-पत्नी दोनों एक महल के निकट पहुँचे। सुकन्या को

अरविंद मल्होत्रा

बाहर छोड़ युवराज दोनों का आहार लाने महल के भीतर चले गये ।

उस वक़्त उस महल के मालिक की पत्नी पद्मावती महल पर खड़े यह दृश्य देख रही थी । युवराज के भीतर जाते ही पद्मावती ने सुकन्या के पास अपने नौकर को भेजकर कहलाया–"तुम्हारे पति अचानक बेहोश हो गये हैं । तुम जल्दी भीतर आ जाओ ।" सुकन्या घबरा गई । धोखे की शंका किये बिना तुरंत भीतर चली गई । मौक़ा पाकर पद्मावती ने सुकन्या को एक कमरे में बंद किया ।

पद्मावती दुष्ट स्वभाव की थी । वह सामुद्रिकशास्त्र में पारंगत थी । सुकन्या को देखते ही उसने भांप लिया कि उसमें महारानी बनने योग्य लक्षण हैं । वह इस लोभ में पड़ गई कि यदि सुकन्या को अपनी बहू बना ले तो उसका पुत्र महाराजा बन जाएगा ।

युवराज पुष्पसिंह आहार लेकर बाहर आया, तो देखता क्या है, सुकन्या गायब है । उसने सुकन्या का नाम लेकर कई बार पुकारा । लेकिन कोई फ़ायदा न रहा । वह पागल हो सुकन्या के नाम का उच्चारण करते सारी जगह भटकने लगा ।

दूसरे दिन पद्मावती ने सुकन्या से पूछा कि वह अपने पुत्र के साथ शादी करके उसकी पुत्रवधू बने । सुकन्या ने साफ़ कह दिया कि किसी भी हालत में वह अपने शील को बेचने के लिए तैयार नहीं है । पद्मावती ने उसे धमकी दी कि जब तक सुकन्या अपने पुत्र के साथ शादी करने को तैयार न हो जाएगी तब तक उसे बन्दी बना कर रखा जाएगा ।

सुकन्या तो बड़ी बुद्धिमती है । उसने दुष्ट पद्मावती को चकमा देने के लिए एक उपाय सोचा । उसने पद्मावती से कहा– "अच्छी बात है, मैं तुम्हारे पुत्र के साथ विवाह करूँगी, लेकिन मुझे तो एक हफ़्ते तक व्रत रखना है ।" पद्मावती ने सुकन्या की शर्त को मान लिया ।

सुकन्या का व्रत यह था–सात दिन तक उस घर में जो भी आये, उन सबको वही स्वयं खाना देगी। उसका ख़्याल था कि उसका पति उसी प्रदेश में कहीं भटकता होगा और इन सात दिनों के अन्दर ज़रूर आ जाएगा। उसने इस ख़्याल से एक चिट्ठी लिख कर अपने पास रख ली कि उसका पति आ जाय तो उसको सौंप दे। उसने चिट्ठी में लिखा था कि मैं इस घर में फँस गई हूँ। किसी भी उपाय से सही मुझे यहाँ से ले जाओ।

लेकिन छे दिन बीत गये, पुष्पसिंह लौट कर नहीं आया। सुकन्या विकल हो उठी। उसने भगवान से प्रार्थना की कि उस घर से भाग जाने का कोई रास्ता दिखावे। मगर व्रत के अंतिम दिन पुष्पसिंह आ पहुँचा। उसको देखते ही सुकन्या का दिल उछल पड़ा। परंतु पागल पुष्पसिंह अपनी पत्नी को पहचान नहीं पाया। सुकन्या ने आहार के साथ अपनी चिट्ठी भी उसके हाथ दे दी।

पुष्पसिंह ने खाना तो खाया, पर चिट्ठी को वहीं पर छोड़कर चला गया।

एक दुष्ट व्यक्ति ने उस चिट्ठी को लेकर पढ़ लिया। उसमें सुकन्या ने लिखा था–"आज आधी रात के वक़्त आप यहाँ पर आ जाइए। मैं ड्योढ़ी पर आप का

इंतज़ार करती रहूँगी। मुझे यहाँ से मुक्ति पानी है।"

उस दुष्ट व्यक्ति ने उस मौक़े का फ़ायदा उठाना चाहा। वह एक वृद्ध का वेष धर कर अर्द्ध रात्रि के समय उस मकान के सामने आया। अपने पति की प्रतीक्षा करनेवाली सुकन्या से वह दुष्ट बोला–"बेटी, मैंने तुम्हारी चिट्ठी पढ़ ली है। तुम्हारी रक्षा करने के लिए तुम्हारा पति नहीं आयेगा। तुम मेरे बारे में चिंता न करो। मैं तुम्हें बचा कर अपने घर ले जाऊँगा। वहाँ पर मैं और मेरी बूढ़ी पत्नी हम दोनों ही हैं। इसलिए तुम्हें कोई तक़लीफ़ न होगी।"

सुकन्या को लगा कि यहाँ से बचकर वह दूसरे खतरे में फँस सकती है। मगर उसे पहले उस महल से भाग जाना ज़रूरी था। इसलिए उसने उस दुष्ट से कहा– "अच्छी बात है, चलो।"

दोनों आखिर एक जंगल में पहुँचे। वहाँ पर उस दुष्ट ने सुकन्या के साथ बलात्कार करना चाहा। सुकन्या ने अपनी आत्मरक्षा के हेतु कमर से कटार निकाल कर उस दुष्ट की छाती में भोंक दी। वह दुष्ट पीड़ा से कराहते हुए वहीं पर ठण्डा हो गया।

सारा जंगल सिंहों के गर्जन तथा हाथियों के चिंघाड़ों से गूँज रहा था। सुकन्या डरकर एक पेड़ पर चढ़ बैठी।

सवेरा होते ही सुकन्या पेड़ से उतर कर अपने पिता के नगर की ओर चल पड़ी। तीन दिन की यात्रा के बाद वह सकुशल अपने पिता के घर पहुँची। उसके मुंह से सारा समाचार सुनकर सुकन्या के पिता ने अपने दामाद को खोजने के लिए नौकरों को भेजा। नौकरों ने सारी दिशाएँ खोज डालीं; आखिर पुष्पसिंह मिल गया। सुकन्या ने रात-दिन जाग कर अपने पति की सेवा की, परिणाम स्वरूप पुष्पसिंह का मति-भ्रमण जाता रहा। वह अपनी पत्नी को पहचान गया। वहाँ पर थोड़े दिन बिता कर पुनः वे दोनों पुष्पसिंह के नगर वापस लौटे।

पुष्पसिंह का पिता यह सोचकर निराश हो गया था कि उसका पुत्र शिकार खेलते किसी खतरे में फंस कर मर गया होगा। ऐसी हालत में अपने पुत्र को अचानक एक दिन अपनी सुंदर पत्नी को साथ लेकर घर वापस लौटे देख उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। पुष्पसिंह ने सारा समाचार आदि से लेकर अंत तक अपने पिता को सुनाया और कहा–"सुकन्या ने कहा था कि ख़तरे के समय वह अपने शील की रक्षा कर सकेगी। यह बात उसने अक्षरशः साबित की है।"

खज़ाने का भेद

एक गांव में कमलगुप्त और विमलगुप्त नामक दो व्यापारी थे। दोनों की दूकानें आमने-सामने थीं। दोनों के मन में यही इच्छा थी कि एक से बढ़कर एक धनी बन जाय।

एक दिन सवेरे कमलगुप्त अपनी दूकान खोले बैठा था, तभी एक बैरागी तानपूरे पर गाते दूकान के सामने से गुजरा।

"गांव के बाहर, कब्र के नीचे
है इक खजाना!
जो करेगा कोशिश
सो पायेगा उसे।"

यह गीत सुनते ही कमलगुप्त को दस साल पहले की एक बात याद आई। दस साल पहले उस गांव में सुलतानों के खानदान का उस्मान नामक एक आदमी था। कोई यह नहीं जानता था कि वह कहां से आया है। उसकी कांख में नक्काशी की गई एक लकड़ी का बक्सा था। किसी के मुंह से कमलगुप्त ने सुना था कि उस बक्से में मस्तान के पुरखों का खज़ाना है। उसके मरने पर किसी दयालु व्यक्ति ने उसके लिए एक कब्र बनाया और उसमें उसके बक्से को भी दफ़ना दिया।

अब बैरागी का गीत सुनने पर कमलगुप्त को वह बात याद आ गई। वह उठ खड़ा हुआ। बैरागी के पास जाकर उसने पूछा–"साधू महाराज! कोशिश करने पर क्या वह खज़ाना जरूर हाथ लगेगा?"

बैरागी ने उसकी ओर विस्मय के साथ देखा और कहा–"ज़रूर मिल जाएगा, बेटा! कोशिश करके देखो।"

कमलगुप्त ने विमलगुप्त की दूकान की ओर नजर दौड़ाई। उसे लगा कि विमलगुप्त ने बैरागी की बातें सुनी नहीं

शरद कुमार

है। वह अपने व्यापार में डूबा हुआ था। इस पर कमलगुप्त ने इतमीनान से ठण्डी सांस ली और घर जाकर सारा समाचार अपनी पत्नी को सुनाया।

"तो देरी क्यों करते हो? सब लोग खजाने के लिए टूट पड़ेंगे। आज रात को ही श्मशान में जाकर खज़ाना खोद लाओ।" पत्नी ने उकसाया।

कमलगुप्त श्मशान और भूत-प्रेतों के नाम से ही थर्रा उठता था। इसलिए उसने अपने नौकर को साथ चलने का आदेश दिया। नौकर ने बताया कि रात में वह ज़रूर आ जाएगा।

आधी रात बीतने को थी, फिर भी नौकर न आया। कमलगुप्त अपने मन में नौकर को कोसते हुए हाथ में कुदाल और फावड़ा लेकर अकेले ही श्मशान की ओर चल पड़ा। धड़कने वाले दिल पर क़ब्ज़ा करते उस्मान के क़ब्र की ओर बढ़ा। देखता क्या है, विमलगुप्त क़ब्र को तोड़ कर ज़मीन खोद रहा है। कमलगुप्त वहीं पर एक पेड़ की आड़ में खड़े होकर विमलगुप्त की ओर एकटक देखता रहा।

विमलगुप्त ने चार फुट ज़मीन खोदा ही था, उसे एक कंकाल और नक्काशी की गयी एक लकड़ी की पेटी दिखाई दी। पेटी को खोल कर देखा, उसमें कपड़ों की एक गठरी थी। गठरी पर तीन गांठें पड़ी थीं। विमलगुप्त ने पहली गांठ खोली ही

थी, बस उसे ये शब्द सुनाई दिये–"अरे विमलगुप्त, मेरे क़ब्र को तोड़ कर मेरे खज़ाने को लूट लेना चाहते हो? तुम्हारे अंतिम दिन निकट आये हैं।"

क़ब्रों के बीच में से एक नक़ाब वाली भारी आकृति ऊपर उठी। उसे देख विमलगुप्त कांप उठा। वह गिड़गिड़ा कर बोला–"भगवान! इस बार के लिए मुझे क्षमा करके छोड़ दो। मैंने अपराध किया है।" यों कहते गठरी को वहीं पर फेंक कर विमलगुप्त भाग खड़ा हुआ।

उस दृश्य को देखने पर कमलगुप्त को भी डर लगा। वह भी भूत की आँखों से बच कर भाग जाना चाहता था, तभी भूत ने अपना नक़ाब निकला, वह जिस क़ब्र पर खड़ा था, उससे नीचे कूद कर गठरी की दूसरी गांठ खोलने लगा।

नक़ाब वाला व्यक्ति और कोई न था, कमलगुप्त का नौकर था। वह जब तीसरी गांठ खोलने को हुआ, तभी उसके हाथ पर खून की दो बूंदें गिर पड़ीं। उसने सिर उठा कर देखा। पेड़ के पत्तों के बीच में से दो आँखें चमक रही हैं। वह "बाप रे, बाप! भूत है!" यों चिल्लाते गठरी को वहीं पर फेंक कर भाग गया।

कमलगुप्त को अपने नौकर के डरने का कारण मालूम न हुआ। उसने आगे बढ़ कर पेड़ की डालियों में देखा, वहाँ पर किसी चीज़ को खाते हुए उल्लू अस्पष्ट दिखाई दिया।

"कमबख्त! उल्लू को देख डर गया है! कायर है!" यों सोचते कमलगुप्त ने गठरी को हाथ में लेकर तीसरी गांठ खोल दी। उसमें सिवाय पुराने कपड़ों के कुछ न था। उस्मान अपनी औरत को बहुत चाहता था। इसलिए उसकी औरत की यादगार में उसने अपनी बीबी के कपड़े अपने साथ रख लिये थे।

अपनी मेहनत को व्यर्थ देख कमलगुप्त निराश हो गया। उसी वक़्त उसे पास में ही कोई ज्वाला दिखाई दी, साथ ही घुंघुरों की आवाज़ सुनाई दी। वह डर गया, यों चिल्लाते भाग खड़ा हुआ–'बाप रे बाप! यह तो कोई अगिया है।' तभी उसे लगा कि कोई उसकी धोती पकड़ कर खींच रहा है, वह डर के मारे चीख कर गिर पड़ा।

असल में बात यह थी कि पहले कमलगुप्त के नौकर की चिल्लाहट सुन कर मरघट का पहरेदार मशाल लेकर आ निकला। उसकी कमर में सदा घुंघरू बंधे होते हैं। वह दूसरी बार कमलगुप्त की आवाज़ सुन कर दौड़ कर आ पहुंचा। उसने देखा कि कमलगुप्त वहां पर बेहोश पड़ा हुआ है। उसने गांव में जाकर यह ख़बर दी। कमलगुप्त के स्वस्थ होने में क़रीब एक महीना लगा।

एक दिन कमलगुप्त दूकान में बैठा हुआ था, वही बैरागी वही गीत गाते उधर से आ निकला। कमलगुप्त ने बैरागी को निकट बुला कर कहा–"अबे साधू! तुम सफ़ेद झूठ बोलते हो। वहां पर न क़ब्र हैं और न खज़ाना ही। यह सब झूठ है।"

बैरागी ने आश्चर्य में आकर कहा–"बेटा, झूठ क्या है? कामनाओं से पूर्ण इस शरीर के बाहर तथा मन के भीतर आत्मा नामक खज़ाना है। जो कोशिश करेगा, उसी को उसके दर्शन होंगे, समझें!" यों समझा कर गीत गाते बैरागी अपने रास्ते चला गया।

कमलगुप्त अवाक् हो बैरागी की ओर देखता ही रह गया!
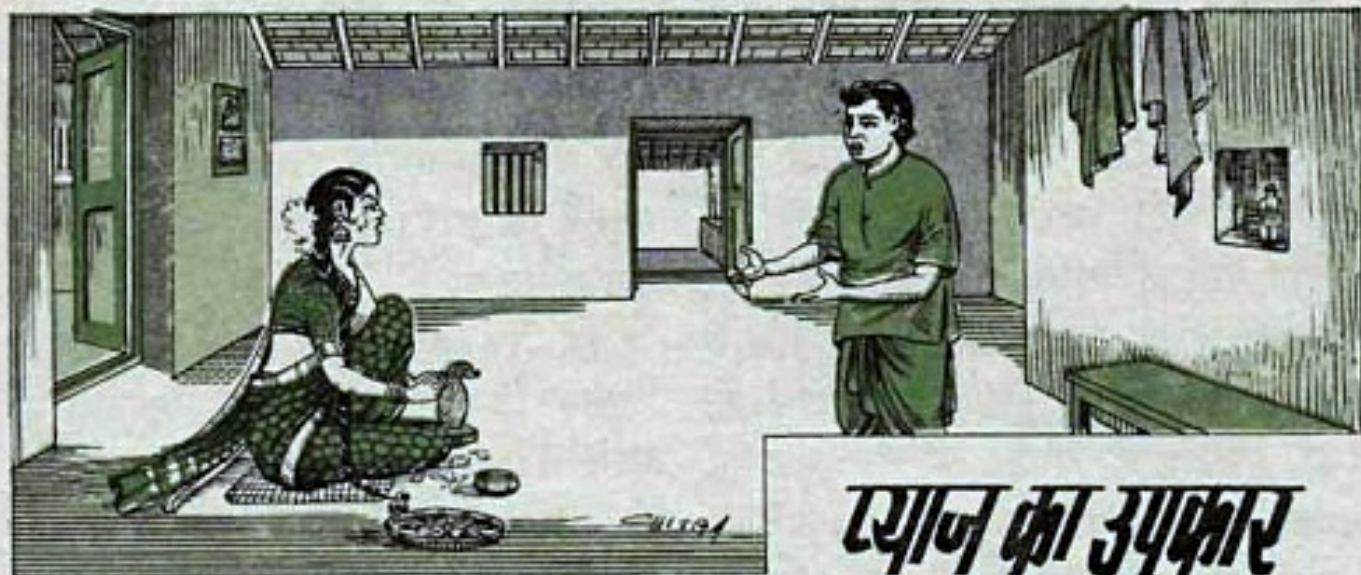
प्याज का उपकार

एक गाँव में गणपत राम नामक एक लड़का था, वह अव्वल दर्जे का सुस्त और पेटू था। वह अकसर पड़ोसी गाँव में स्थित अपनी दीदी पार्वती के घर जाता, कई सप्ताह और महीनों वहीं पड़ा रहता। काम-वाम कुछ करता न था। दीदी को अपने छोटे भाई का यह व्यवहार अच्छा न लगा। उल्टे उसे अपने भाई का यह काम अपमानजनक प्रतीत हुआ। वह सोचने लगी कि अपने भाई को डांटे-डपटे बिना उसका पिंड कैसे छुड़ाया जाय।

एक दिन पार्वती का पति जगदीश सवेरे उठते ही बोला–"अरी सुनो, आज मुझे मुर्गी का मांस और बड़े खाने को मन ललचा रहा है। तुम सारा इंतज़ाम करो, इस बीच में छुरी का सान धरूंगा, तब मुर्गी काटूंगा।" यों कहते छुरी लेकर पिछवाड़े में सान धरने चला गया।

पार्वती ने उड़द की दाल भिगो दी। प्याज काटने बैठ गई। प्याज के तीखेपन से पार्वती की आँखों से पानी गिरने लगा। उसी वक़्त गणपत राम आ धमका। उसके दिमाग में गोबर भरा था। इसलिए उसकी दीदी की आँखों से पानी निकलने का कारण उसकी समझ में न आया। उसने पूछा–"दीदी, रोती क्यों हो?"

पार्वती के दिमाग में झट एक उपाय सूझा। उसने रोते हुए कहा–"क्या बताऊँ, भैया! तुम आलसी बनकर बार-बार हमारे घर आ धमकते हो, इसलिए तुम्हारे बहनोई तुमसे बहुत नाराज़ हैं। वे कह रहे थे कि इस बार तुम दिखाई दोगे तो तुम्हारा गला काट डालेंगे। इसीलिए पिछवाड़े में छुरी का सान धर रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तुमको इस खतरे से कैसे बचाऊँ?"

शशि सहाय

गणपति राम अपनी दीदी के मुंह से ये बातें सुन घबरा गया। उसने पिछवाड़े में झाँक कर देखा। वहाँ पर जगदीश छुरी का सान धरते दिखाई दिया। इसे देख गणपत राम के पसीना छूटने लगा।

सान धरना समाप्त करके जगदीश ने घर में प्रवेश करते हुए गणपत राम को देखा, उत्साह में आकर बोला–"गणपत, अच्छा हुआ, तुम समय पर आ गये!"

अपने बहनोई के मुँह से ये बातें सुन गणपत राम और घबरा गया। वह लगा दौड़ने। भागनेवाले साले को देख जगदीश अचरज में आ गया, अपनी पत्नी से पूछा–"क्या बात है, तुम्हारा भाई मुझे देख भागता जा रहा है? आज तक कभी ऐसा तो नहीं हुआ?"

"बात वैसे कोई ख़ास नहीं है! आज से वह आलसीपन छोड़ कर लकड़ी काट करके अपना पेट पालना चाहता है। तुमसे छुरी दिलाने को कहा। मैंने उसे डांटा–"तुम्हारा जंगल में जाकर लकड़ी काटना और तुम्हारे बहनोई का छुरी देना होने को नहीं है। बस, चुप रह जाओ। फिर क्या था, वह नाराज़ होकर यह कहते भाग रहा है कि आइंदा में तुम्हारे घर में क़दम तक न रखूंगा।"

इस पर जगदीश ने खीझ कर कहा–"इतने दिन बाद जब वह मेहनत करके अपने पैरों पर आप खड़ा होना चाहता है तो उसे छुरी दिये बिना तुम नाराज़ हो गई?" यों कहते वह गणपत राम का पीछा करने लगा। थोड़ी दूर पर गणपत भाग रहा था। जगदीश चिल्ला कर बोला–"गणपत राम! ठहर जाओ, लो यह छुरी!" अपने बहनोई की चिल्लाहट सुनकर गणपत और डर गया, दौड़ते-दौड़ते उस गांव की सीमा भी पार कर गया।

जगदीश यह कहते लौट आया–"यह तो उसकी बद क़िस्मती है! मैं क्या करूं!" पार्वती ने जो सोचा था, वही उसने मन में कहा–"यह सब तो प्याज का ही उपकार है!"

विश्वासपात्र नौकर

शेषपति को एक बार किसी काम से जंगल के उस पार के गाँव में जाना पड़ा। वह जंगल का रास्ता जानता न था। लेकिन उस गाँव का एक व्यक्ति रास्ते में मिला, वही शेषपति को गाँव में पहुँचा कर अपने घर चला गया। अपना काम समाप्त करके शेषपति अकेले ही अपने गाँव की ओर चल पड़ा। वह भटक गया। संध्या के समय तक किसी गाँव में पहुँचा।

वह गाँव पहाड़ी तलटटी में था। गाँव के मुहाने ही पूराने ज़माने का एक बहुत बड़ा मकान था। उसके किवाड़ों पर नक्काशी की गई थी। शेषपति ने दर्वाजा खटखटाया। भीतर से एक वृद्ध ने आकर किवाड़ खोल दिये।

"मैं अपने गाँव लौटते रास्ता भटक गया हूँ, आज रात को अपने घर आश्रय दे सकते हैं?" शेषपति ने वृद्ध ने पूछा।

वृद्ध ने शेषपति को नखशिख पर्यंत देख कर पूछा–"तुम सांबशिव के पुत्र हो न? तुम्हारा गाँव फलाना है न?"

शेषपति वृद्ध के मुंह से ये बातें सुन चकित रह गया। उसने वृद्ध से पूछा–"आप का कहना सही है, लेकिन आप ये सारी बातें कैसे जानते हैं?"

"तुम्हारे पिता तो मेरे बचपन के मित्र हैं। शादी के होते ही मैं इस गाँव में घर जमाई बन कर आया हूँ। उन दिनों में सांबशिव बिलकुल तुम जैसे ही थे। तुम्हें देखने पर मुझे लग रहा है कि मैं तुम्हारे पिता को देखता हूँ। कल तो पर्व का दिन है। हमारे साथ पर्व का दिन बिता कर तब जाओ।" इन शब्दों के साथ वृद्ध ने अपनी पत्नी और बच्चों का परिचय भी कराया।

विमल कुमार अरोरा

इसके बाद शेषपति ने नहा-धोकर खाना खाया। वृद्ध ने शेषपति के सोने के लिए अलग से एक कमरे का इंतज़ाम किया। गद्दे पर लेटे कर तुरंत शेषपति सो गया।

आधी रात के वक़्त शेषपति की आँख खुल गई। उसे लगा कि घर में कई लोगों की चहल-पहल है। पक्वानों की गंध भी आ रही थी। शेषपति अचरज में आ गया और उठ कर अपने कमरे से बाहर आया। एक दूसरे कमरे में वृद्ध, उसकी पत्नी और उसके बच्चे गहरी नींद सो रहे हैं। फिर भी घर-भर में चहल-पहल है। सब जगह लोग खचाखच भरे मकान की सफ़ाई कर रहे हैं, कुछ लोग पानी से फ़र्श धो रहे हैं; कुछ लोग कहीं से भारी गठरियाँ ला कर एक कोने में एक के ऊपर एक लाद रहे हैं। चार औरतें रसोई में पक्वान्न बना रही हैं।

शेषपति उन लोगों के बीच चहल-क़दमी करते आ खड़ा हुआ, पर किसीने उस पर ध्यान नहीं दिया।

"तुम सब कौन हो? ये सारे प्रबंध क्या हैं?" शेषपति ने पूछा, पर किसी ने भी कोई जवाब न दिया।

शेषपति ने सोचा कि अब उन लोगों से पूछना बेकार है, तब वृद्ध को जगा कर पूछा—"इस घर में लोगों की भीड़ लगी है। सब लोग कोई न कोई काम कर रहे हैं, घर में ऐसा कोलाहल मचा हुआ है और आप लोग गहरी नींद सो रहे हैं?"

"अरे, तुम जाग गये? मैंने सोचा था कि तुम देरी से जागोगे, इसीलिए मैंने यह बात तुमसे नहीं बताई। कई साल पहले यह मकान एक जमीन्दार का था। ये सब उनके विश्वासपात्र नौकर हैं। मगर काल प्रवाह में जमीन्दार भी चल बसे और उनके नौकर भी। फिर भी इस घर के साथ नौकरों का बंधन बना रहा। कोई पर्व-त्योहार आया तो वे सब आ जाते हैं, सारे काम करके इस घर की शोभा बढ़ा कर चले जाते हैं। हम भी

पहले इसे देख घबरा गये। लेकिन धीरे-धीरे हम इसके आदी हो गये हैं। यदि हम उनको नहीं छोड़ेंगे तो वे अपने काम पूरा करके चल देते हैं।" वृद्ध ने समझाया।

"बाप रे, बाप! तब तो ये लोग भूत हैं।" शेषपति चिल्ला पड़ा।

"तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। ये भूत हमारा हित ही करते हैं। हमारी थोड़ी-सी भी हानि नहीं करते। तुम जाकर लेट जाओ।" वृद्ध ने ढाढ़स बंधाया।

शेषपति अपने कमरे में लौट आया। पर उसे नींद नहीं आई। उसके मन में वृद्ध के परिवार के प्रति ईर्ष्या जाग उठी। मगर एक पैसा भी खर्च किये बिना ये भूत उनके सारे काम संपन्न करके चले जाते हैं। यह कैसे भाग्य की बात है। यदि ये भूत हित करने वाले हैं तो वह भी उनके द्वारा फ़ायदा क्यों न उठाये?

इस विचार के आते ही शेषपति फिर कमरे से बाहर आया। तब तक शायद सारे काम पूरे हो चुके थे। भूतनियां रंगोली कर रही थीं, भूत तो तोरण बांध रहे थे।

शेषपति ने भूतों के पास जाकर कहा—"तुम लोग भी कैसे मूर्ख हो। आज तक चमगीदड़ की भांति तुम सब इसी घर के आश्रय में पड़े हुए हो। मेरे घर चले आओ। मेरा हित करो। यहां पर कोई

तुम्हारा परामर्श तक करने वाला दिकाई नहीं देता है।"

इस पर भी भूतों ने शेषपति की बातों पर ध्यान नहीं दिया, वे चुपचाप अपने काम किये जा रहे थे। शेषपति ने उन्हें अनेक प्रकार से समझाया, आखिर वह ऊब गया, उसे भूतों पर क्रोध भी आया। उसने सोचा कि भूत उसकी हानि नहीं करेंगे।

इस विश्वास के साथ उसने एक भूत की पीठ पर दे मारा और कहा–"अरे बदमाश बूढ़े! तुम भी जवाब क्यों नहीं देते?"

इस पर सारे भूत बिगड़ पड़े, सबने काम रोक कर शेषपति पर हमला किया और उसे उठा कर घर के बाहर फेंक दिया। शेषपति का सर चकरा गया। घर के बाहर घर को साफ़ किया हुआ पानी बह रहा था। उसमें गिरने के कारण शेषपति का सारा बदन कीचड़ से सन गया।

वह कराहते हुए धीरे से उठ खड़ा हुआ। तब तक सवेरा होने को था। उस वक़्त भूतों का कहीं पता न था। मगर उसकी चिल्लाहटें सुनकर वृद्ध का परिवार जाग उठा। सबने बाहर आकर आश्चर्य के साथ पूछा–"शेषपति, तुम्हें क्या हुआ?"

शेषपति ने क्रोध भरे स्वर में कहा–"तुमने तो बताया था कि ये भूत किसी की हानि नहीं करते। देखते नहीं हो कि उन्हीं भूतों ने मुझ को कैसे घर के बाहर फेंक दिया है?"

वृद्ध ने भांप लिया कि शेषपति ने भूतों को छेड़ दिया होगा, उसने कहा–"मैंने झूठ तो नहीं कहा था। शायद उन भूतों ने सोचा होगा कि तुम्हें घर से बाहर फेंकने में ही हमारी भलाई होगी।"

वृद्ध की बातें सुन शेषपति शर्मिंदा हो गया। वह दिन पर्व का था, फिर भी वह अब एक क्षण भी वहाँ पर रह न पाया। उसी वक़्त वह अपने गाँव की ओर चल पडा।
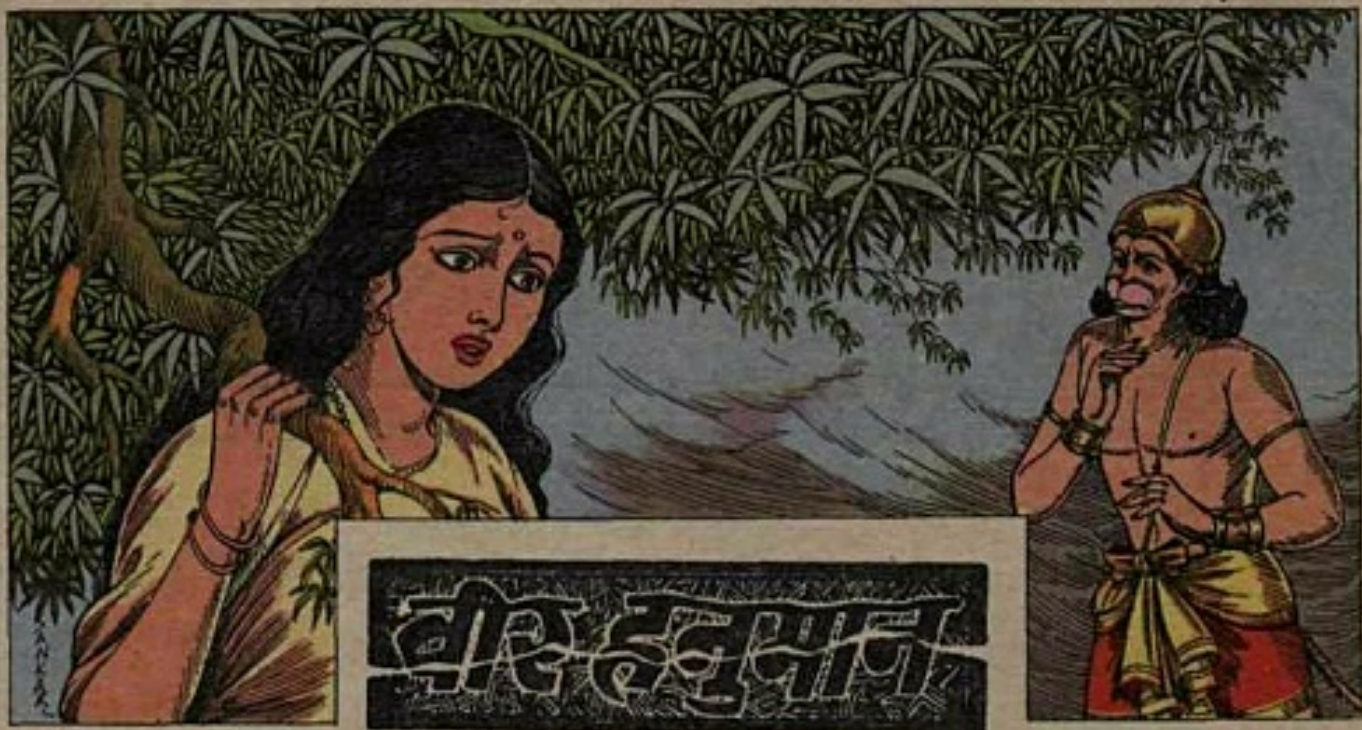
वीर हनुमान ने सीताजी से यों कहा : "देवीजी, मैं श्री रामचन्द्र का दूत बनकर आप के पास आया हूँ। रामचन्द्रजी कुशल हैं। लक्ष्मणजी ने आप को प्रणाम बताया है।"

राम एवं लक्ष्मणजी की बात सुनते ही सीताजी प्रफुल्लित हो उठीं। लेकिन हनुमान को धीरे धीरे उनके निकट आते देख सीताजी यह सोचकर डर गईं कि कहीं रावण बंदर का रूप धरकर उनके निकट आया हो। वह पेड़ की एक डाल पकड़े खड़ी थीं, पर अब वह जमीन पर धड़ाम से गिर पड़ीं।

हनुमान ने भाँप लिया कि सीताजी उस पर संदेह करके डर रही हैं, उसने सीताजी के डर की दूर करने के लिए हाथ जोड़कर प्रणाम किया। मगर सीताजी ने उसकी ओर नहीं देखा, गहरी साँस लेकर कहा–"यदि तुम रावण ही हो तो इस प्रकार माया रूप में बंदर बनकर मुझे दुख पहुँचाना उचित नहीं है। पंचवटी में भी तुम इसी प्रकार माया रूपी बनकर आये थे। ऐसा न होकर यदि तुम सचमुच श्रीरामचन्द्र के दूत हो तो उनके गुणों का वर्णन करो।"

सीताजी के मन में यह भी संदेह हुआ कि वह सपना देख रही है और उसका मन विचलित हो गया है! यों सोचकर वह दुख में डूब गईं। हनुमान ने सीताजी के संदेह का अनुमान लगाया और

१४. अशोकवन का ध्वंस

रामचन्द्रजी की दी हुई अंगूठी सीताजी के हाथ दी तब रामचन्द्रजी के सारे गुणों का बखान किया। लंका में पहुँचने का सारा वृत्तांत सुनाकर सीताजी के मन को शांत किया। सीताजी के प्रश्नों के उत्तर में हनुमात ने रामचन्द्र तथा लक्ष्मण की रूपरेखाओं का भी परिचय दिया। इसके बाद उसने रामचन्द्रजी तथा सुग्रीव के बीच की मैत्री का वृत्तांत तथा सीतान्वेषण का समाचार भी आदि से अंत तक सुनाया। सारी कथा सुनकर सीताजी ने आनंद बाष्प गिराये, तब जाकर हनुमान के प्रति उनका विश्वास जम गया।

इस पर हनुमान ने सीताजी से पूछा– "आप ही बताइए, अब मुझे क्या करना होगा? मुझे तो शीघ्र जाकर रामचन्द्रजी को यह समाचार देना है।"

सीताजी ने शांत स्वर में कहा–"समुद्र को पार कर राक्षसों से बचते हुए लंका में विचरण करना असाधारण प्रज्ञा की बात ही कही जाएगी। रावण ने मुझे एक वर्ष की अवधि दी है, इस अवधि के बीतने के पहले ही श्रीराहचन्द्र को यहाँ पर आने को बता दो। रावण का छोटा भाई विभीषण है। उसने रावण को सलाह दी कि मुझे रामचन्द्रजी को सौंप दे, पर रावण उसकी एक भी नहीं सुन रहा है। विभीषण की पुत्री नला है। उसी ने अपनी माता के आदेश पर यहाँ आकर मुझे यह समाचार दिया है।"

हनुमान ने सीताजी को समझाया– "मैं ज्यों ही यह समाचार श्रीरामचस्द्र को दूंगा, त्यों ही वे वानर तथा भल्लूकों को साथ ले यहाँ पर आ जायेंगे। यदि आप संकोच न कर मेरी पीठ पर सवार हो जायेंगी तो समुद्र को पार कर मैं आप को श्रीरामचन्द्र के पास ले जाऊंगा। आप इस बात के लिए डरिये मत कि मैं समुद्र पार न कर सकूंगा। यदि मैं चाहूँ तो रावण के साथ इस लंका को भी उठा

ले जा सकता हूँ। ऐसा करूँ तो बहुत ही शीघ्र आप श्रीरामचन्द्र के दर्शन अवश्य कर सकेंगी।"

"हे हनुमान! तुम इस अल्प शरीर को लेकर मुझको बहुत दूर ले जाने की बात करते हो, इसीलिए तुम बंदर बने हुए हो!" सीताजी ने कहा।

हनुमान ने समझ लिया कि सीताजी उसकी शक्ति एवं सामर्थ्यों से अपरिचित हैं, इसीलिए संदेह कर रही हैं, उसने अपना वास्तविक रूप दिखाना चाहा। तब वहाँ से थोड़ी दूर चला गया। धीरे धीरे अपनी देह का विस्तार करने लगा। पर्वत जैसी उसकी आकृति, लाल चेहरा, जबड़े व नख देख सीताजी ने अपने मन में सोचा कि यह निश्चय ही लंका नगर को उखाड़कर ले जा सकता है।

हनुमान ने कहा—"सीताजी! आप कृपया संदेह न करें। देरी न कीजिए! शीघ्र ही श्रीरामचन्द्र तथा लक्ष्मण के दुख को दूर कीजिए।"

"हनुमान! तुम्हारी शक्ति और सामर्थ्य को मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। यदि तुम मुझको यहाँ से ले जाओगे तो कोई भी राक्षस तुम को रोक न पायेगा। मगर मैं चाहती हूँ कि श्रीरामचन्द्रजी का कार्य व्यर्थ न जाय! मेरा तुम्हारे साथ चलना

भूल होगी। तुम वायु वेग के साथ जब आसमान में उड़ चलोगे तब मैं भयभीत हो आँखें चकराने के कारण समुद्र में गिर जाऊंगी। तुम चाहे महान वीर ही क्यों न हो, मेरी रक्षा करने के प्रयत्न में तुम्हें विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा। राक्षस अगर तुम्हारा पीछा करते हुए युद्ध करेंगे तो मैं गिरकर राक्षसों के हाथों में पड़ सकती हूँ। ऐसी हालत में तुम्हारा यह सारा श्रम व्यर्थ जाएगा। इसलिए अच्छा यह होगा कि तुम शीघ्र जाकर रामचन्द्रजी को मेरा समाचार दो और उन्हें यहाँ पर बुला लाओ। अलावा इसके मैं पराये पुरुष का स्पर्श नहीं करती।

रावण जब ज़बर्दस्ती मुझको ले आया, तब मैं असहाय थी, इसलिए कुछ कर न पाई।" यों सीताजी ने हनुमान को समझाया।

हनुमान को भी सीताजी की बात उचित प्रतीत हुई। उसने सीताजी से निवेदन किया कि रामचन्द्रजी को दिखाने के लिए कोई चीज़ निशाने के रूप में दे।

इस पर सीताजी ने यों कहा: "मैं तुम्हें एक घटना सुनाती हूँ। तुम श्रीरामचन्द्र को यह घटना याद दिलाओ। मैं तथा श्रीरामचन्द्रजी जब गंगा के तट पर चित्रकूट पर्वत की ईशान दिशा में स्थित एक आश्रम में निवास करते थे तब एक दिन श्रीरामचन्द्रजी मेरी जांघ पर सिर रखे सो रहे थे। उस वक़्त एक कौए ने आकर मेरे वक्ष में चोंच मारकर मुझे घायल किया। मेरे रक्त से रामचन्द्रजी भी भीग गये। मैंने रामचन्द्रजी को जगाया। वे मेरे रक्त को देख क्रोध में आ गये। उन्होंने एक दाभ निकाला, ब्रह्मास्त्र का मंत्र जाप कर कौए पर उसका प्रयोग किया। उस ब्रह्मास्त्र ने कौए का पीछा करते हुए उसको समस्त लोकों को घुमाया। वह कौओ इंद्र का पुत्र था। कहीं शरण न पाकर वह पुनः रामचन्द्रजी के पास लौट आया और उनके चरणों पर गिर पड़ा। परंतु ब्रह्मास्त्र का प्रयोग व्यर्थ नहीं किया जा सकता था। इसलिए कौए ने अपनी दायीं आंख को अस्त्र की बलि दी और वहाँ से चला गया। ऐसे शक्तिशाली रामचन्द्रजी शत्रुओं का नाश करके मेरे कष्ट दूर क्यों नहीं करते? मैं ने कौन-सा पाप किया है?"

"माताजी! श्रीरामचन्द्र अत्यंत दुख में डूबे हुए हैं। मैंने अनेक यातनाएँ झेल कर आपके दर्शन किये हैं। इस स्थिति में आप को प्रसन्न होना है। दुखी मत होइए। रामचन्द्रजी शीघ्र यहाँ आयेंगे। रावण का वध करके आपको अयोध्या नगरी में ले जायेंगे।" हनुमान ने कहा।

"हनुमान! तुम रामचन्द्रजी के दर्शन करते ही मेरे बदले साष्टांग प्रणाम करो। लक्ष्मण उत्तम चरित्रवाला है। वह अपना सर्वस्व त्याग कर रामचन्द्रजी के साथ वनवास में आया हुआ है। उससे कहो, कि मैंने उसके कुशल-क्षेम पूछा है।" इन शब्दों के साथ सीताजी ने अपने आंचल के छोर में बंधी चूड़ामणि निकाल कर हनुमान के हाथ सौंप दी।

हनुमान ने उस चूड़ामणि को अपनी उंगली में धारण किया। इसके बाद सीताजी की प्रदक्षिणा की, उन्हें प्रणाम करके खड़ा हो गया।

"हनुमान, सुनो! श्रीरामचन्द्रजी इस चूड़ामणि को देखते ही मेरी माताजी, मुझे तथा दशरथजी का स्मरण करेंगे। इसके आगे जो कुछ होना है, वह सारा तुम्हीं पर निर्भर है। मेरे दुख को दूर करने का उपाय तुम्हीं सोचो।" सीताजी ने कहा। तदनंतर सुग्रीव, उसके मंत्री तथा वानर प्रमुखों के कुशल-क्षेम पूछा।

तदुपरांत सीताजी के मन में एक संदेह पैदा हुआ। उन्होंने अपनी शंका प्रकट की–"हनुमान! तुम इस समुद्र को पार कर आ सके, पर श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण और अन्य सेनाएँ यहाँ सक कैसे पहुँच सकती हैं? तुम्हीं रावण का वध करोगे तो मुझे तथा रामचन्द्रजी को क्या यश प्राप्त होगा?"

"माताजी! वानर तथा भल्लूक सेनाओं के अधिपति सुग्रीव संकल्प करेंगे तो कुछ भी कर

सकते हैं। उनकी सेना में मेरे बराबर के व्यक्ति तथा मुझसे भी समर्थ व्यक्ति अनेक हैं। मैं ही समुद्र पार कर सकता हूँ तो उनके लिए बायें हाथ का खेल होगा! इसलिए आप चिंता न कीजिए! आप का शुभ हो!" यों सांत्वना देकर हनुमान ने सीताजी से विदा ली और वहाँ से चल पड़ा।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर उसने अपने मन में सोचा–"मैंने सीताजी को तो देख लिया है, पर एक छोटा-सा काम रह गया है। यह कार्य शौर्य और पराक्रम से ही संभव है! कुछ राक्षसों का वध करने पर ही बाक़ी राक्षसों का घमण्ड चूर होगा। राक्षस युद्ध कैसे करते हैं? उनकी शक्ति और सामर्थ्य कैसी हैं? ये सब जानकर ही किष्किधा को लौटूंगा। राक्षसों को युद्ध के लिए प्रेरित करने का सरल उपाय क्या हो सकता है!"

फिर सोचने लगा-अशोकवन सुंदर है। नंदनवन जैसा है! शायद रावण के लिए यह वन अत्यंत प्रिय होगा! उसे ध्वंस कर दूं तो रावण जरूर नाराज़ होगा! तब रावण उसके साथ लड़ने के लिए राक्षस सैनिकों को भेजेगा। तब लड़ाई होगी। उस वक़्त राक्षसों का वध करके वह निश्चित हो किष्किधा जा सकता है।

यों सोचकर हनुमान अशोकवन के वृक्षों को उखाड़ कर फेंकता गया। साथ ही सुंदर तड़ागों की मेंड़ों को फोड़ डाला, क्रीड़ा-पर्वत के शिखरों को तोड़ दिया। थोड़ी ही देर में अशोकवन उजड़ गया। वृक्षों पर बैठे पक्षी आर्तनाद करने लगे। टूटे पेड़ व लताएँ मुरझाने लगीं। ऐसा लगा कि अशोकवन ही दुख में डूब गया है। इसके बाद हनुमान अशोकवन के द्वार पर खड़े हो राक्षसों का इंतजार करने लगा। उधर पेड़ों के टूटने की ध्वनि तथा पक्षियों के आर्तनाद लंकावासियों को सुनाई दिये। उन ध्वनियों को सुनकर सोनेवाली राक्षस नारियाँ जाग उठीं। विशाल कायावाले हनुमान का अशोकवन

को ध्वंस करते उन लोगों ने देखा। हनुमान ने देखा कि राक्षस नारियाँ उसके इस कृत्य को देख रही हैं। तब उसने अपनी देह का और विस्तार किया।

उस बीभत्स दृश्य को देख राक्षस नारियों ने सीताजी से पूछा–"यह व्यक्ति कौन है? इसको किसने भेजा है? किसलिए वह यहाँ पर आया है? तुम से इसने क्या-क्या कहा? तुम डरो मत! हम से सच-सच बताओ।"

"राक्षस नाना प्रकार के रूप धारण करते हैं। मुझे उनका समाचार कैसे मालूम होगा? साँप के पैर सांप ही जाने। तुम लोग भी राक्षस हो, इसलिए राक्षसों के मायाजाल राक्षस ही जानते हैं। तुम्हीं लोग समझ लो, यह वानर कौन है? क्या क्या करता है? इसको देखने पर मुझे भी डर लगता है! कहो, यह कौन है?" सीताजी ने उल्टा सवाल किया।

सीताजी के मुँह से ये बातें सुन राक्षस नारियाँ डर गईं। कुछ तो उनकी रक्षा करने के लिए रह गईं, कुछ डरकर भाग गईं, बाक़ी राक्षस नारियाँ रावण को यह समाचार देने के लिए चली गईं।

रावण के पास जाकर उन राक्षस नारियों ने बताया–"महाराज! कोई बलवान भयंकर आकृतिवाला अशोकवन में आया हुआ है। वह सीताजी से बात करके अब तक वहीं पर निर्भय घूम रहा है। सीताजी से पूछने पर वह उस व्यक्ति का समाचार बता नहीं रही है। हमें बिलकुल इस बात का पता नहीं लगता कि वह इंद्र का दूत है, कुबेर का दूत है, या राम का दूत है! वह सारा अशोकवन उजाड़ रहा है। सीताजी जिस वृक्ष के नीचे बैठी है, उस वृक्ष को छोड़ सरि पेड़ उखाड़ दिये गये हैं। उस वानर को आप तुरंत कठोर दण्ड दीजिए। उसके केवल इस अपराध पर ही उसका वध किया जा सकता है कि उसने सीताजी से आप की आज्ञा के बिना बात की है।"

अमर वाणी

ऐश्वर्ये वा सुविस्तीर्णे,
व्यसने वा सुदारुणे
रज्ज्वेव पुरुषम् बद्ध्वा
कृतांतः परिकर्षति ॥ १ ॥

[जब हद से ज्यादा ऐश्वर्य प्राप्त होता है और मनुष्य बुरी तरह से व्यसनों का शिकार होता तब देवता मनुष्य को रस्सी की भांति बांध कर खींचते हैं ।]

अकृतात्मान मासाद्य
राजा नमनये रतम्
समृद्धानि विनश्यंति
राष्ट्राणि नगराणि च ॥ २ ॥

[अगर राजा मूर्ख तथा दुष्ट होता है तो संपन्न राज्य और नगर भी नाश को प्राप्त हो जाते हैं ।]

हित्वा धर्मम् तथार्थंच
कामम् यस्तु निषेवते,
स नृक्षाग्रे यथा सुप्तः
पतितः प्रतिबुद्यते ॥ ३ ॥

[धर्म तथा अर्थ को त्याग कर जो व्यक्ति केवल काम की कामना करता है, वह तभी जान सकता हैं जब शाखा के छोर पर पर सोनेवाला व्यक्ति नीचे गिर कर समझ लेता है ।]

पतित

Photo by M. Natarajan
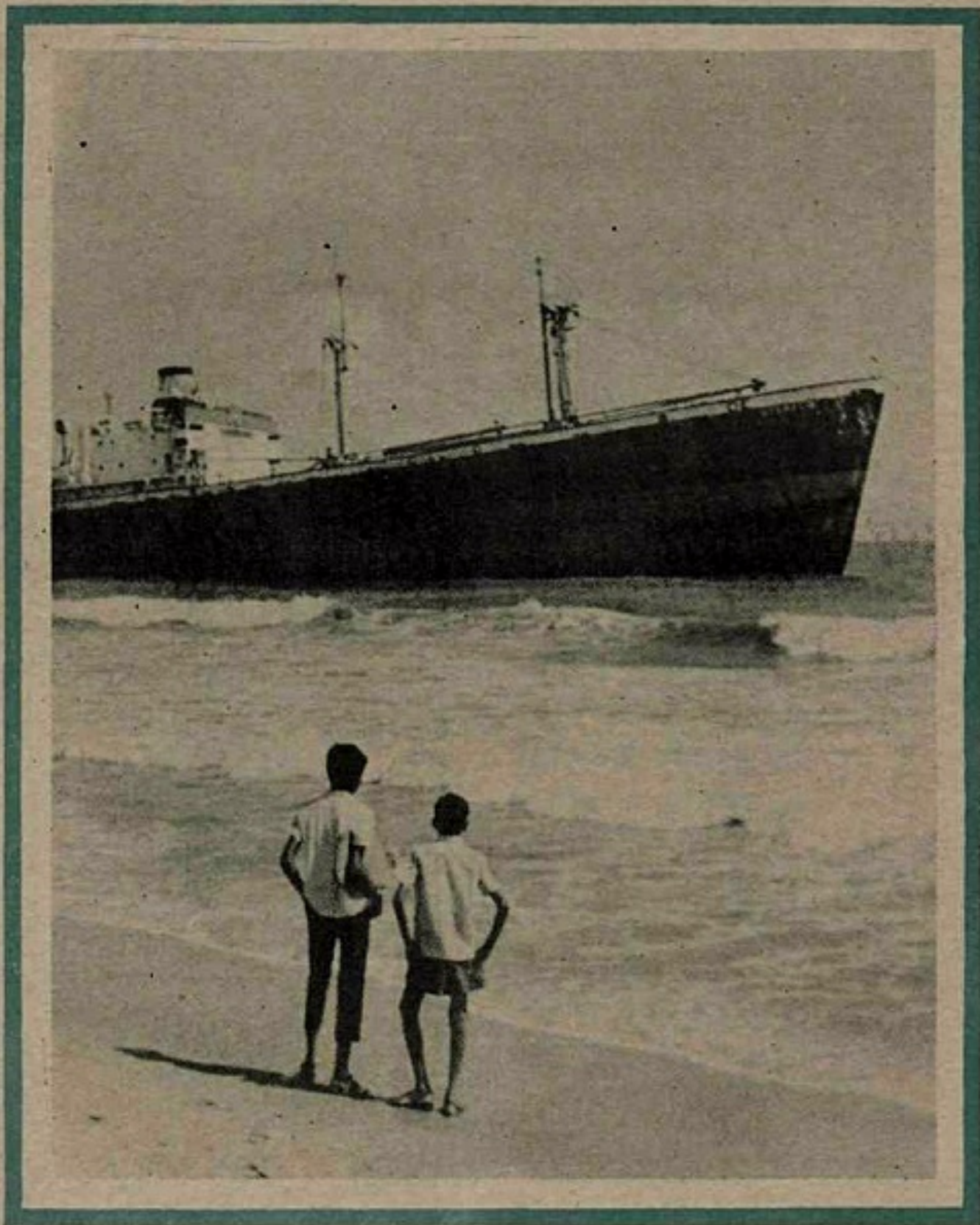
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

सात समुंदर पार कराता !

प्रेषक :
दयानंद सत्संगी

Photo by M. Madan Gopal

पारोली भवन, भोपाल
गंज, भीलवाडा (राज.)

सही राह है यह दिखलाता !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ दिसम्बर १० तक प्राप्त होनी चाहिए । सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें ।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ फरवरी के अंक में प्रकाशित की जायेंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा आवरण पृष्ठ:

हाथों का शृंगार

तीसरा आवरण पृष्ठ:

शरीर का अलंकार

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-600026. Controlling Editor: NAGI REDDI

मैं गंदे पैरों से भला प्लूटो को अन्दर कैसे लाता?
अन्तर्राष्ट्रीय गुणमान के अनुरूप निर्मित सैनेटरीवेयर और वॉल टाइल्स
HT-HSI 8124 R
VITREOUS
हिन्दुस्तान सैनेटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड
२ वेलेसली प्लेस, कलकत्ता ७०००१
सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड
कसार, रोहतक, हरियाना

लूटो जेम्स का मज़ा
कितने त्रिकोण
तुम ढूंढ सकते हो?
Cadbury's
MILK
CHOCOLATE
GEMS
नन्हें-मुन्नों का
मनपसंद
रंग-बिरंग
चॉकलेट
जेम्स
कॅडबरिज़
जेम्स - मज़े का मज़ा, स्फूर्ति की स्फूर्ति
C-5 HN
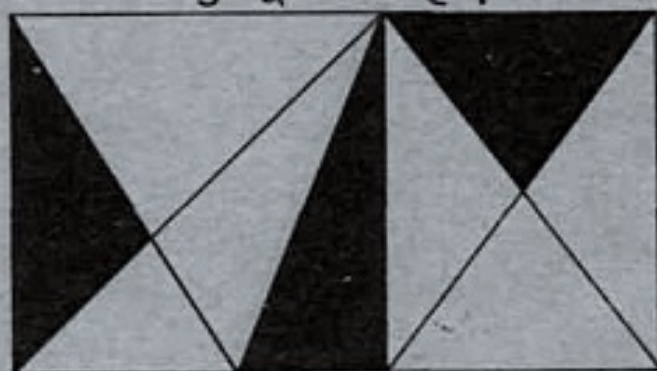
Photo by: **A. L. SYED**

WHOLE-BODY DECORATION

CHANDAMAMA (Hindi) DECEMBER 1975 Regd. No. M. 5452

मित्र-भेद